04 - विचार जो अटल थे, संकल्प जो मोदीजी ने साकार किए

05 - रोशनी, प्रेम और सद्भाव का पर्व है क्रिसमस

A Daily News Magazine

भोपाल

गुरुवार, 25 दिसंबर, 2025

06 - विकसित भारत का कृषि मॉडल-गौ-आधारित प्राकृतिक खेती और...

07 - राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत कृषि सखियों को दिया गया...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 115, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

विनोद कुमार शुक्ल : एक धीमी, अनंत कविता की अन्तिम लय..

आलोक पुतुल

बरसों पहले विनोद कुमार शुक्ल ने एक कविता लिखी थी- संसार में रहते हुए/ मैं कभी घर लौट न सकूं/ बस संसार में रहूं/ जब संसार में न रहूं/ तब घर लौटूं/ और घर मुझसे ख़ाली रहे।

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में अब उनका घर सचमुच ख़ाली है। यह खालीपन मात्र अनुपस्थिति नहीं, बल्कि एक उपस्थिति के चले जाने का बोध है। बरसों-बरस तक साधारण जीवन की सबसे असाधारण व्याख्याओं के साक्षी रहे इस घर में, सन्नाटा पसरा हुआ है। अब इस घर में वह कभी लौट नहीं पाएंगे। रायपुर में उनके निधन के साथ ही हिन्दी का एक अध्याय समाप्त हो गया।

अभी कुछ दिन पहले ही तो जब इस घर में विनोद कुमार शुक्ल को भारत में साहित्य का सबसे बड़ा सम्मान ज्ञानपीठ दिया जा रहा था, उन्होंने अपनी एक कविता पढ़ी थी- जागता हूँ तो सबकी नींद से/ सोता हूँ तो सबकी नींद में/ मैं अकेला नहीं/ मुझमें लोगों की भीड़ इकट्ठी है/ मुझे ढूँढो मत/ मैं सब लोग हो चुका हूँ/ मैं सबके मिल जाने के बाद/ आखिर में मिलूँगा/ या नहीं मिल पाया तो/ मेरे बदले किसी से मिल लेना।

लेकिन सच तो यही है कि किसी दूसरे से मिलना, दूसरे से मिलने की तरह होगा, विनोद कुमार शुक्ल से मिलने की तरह नहीं। हिन्दी की एक पूरी पीढ़ी ने उनसे ही यह जाना कि जीवन में सबसे साधारण दृश्य भी, कैसे असाधारण हो जाता है। उन पर लिखते हुए, पिछले कई दशकों की स्मृतियां इधर-उधर होने लगती हैं। मैंने एक दिन पूछा कि पहली कविता की कोई स्मृति है?

वह पुराने दिनों में डूब गए थे, 'पहली कविता की कोई ऐसी स्मृति तो है नहीं। पहली कविता होते-होते, कई पहली कविताएं हो जाती हैं। लेकिन जिस तरह पहली कविता, पहली कविता न हो कर के, कुछ भी नहीं कविता होती है, उसी तरह से दूसरी कविता होती है, वो भी कुछ भी नहीं कविता होती है। मालूम नहीं, ऐसी कितनी कविताएं, कुछ भी नहीं कविताएं हो कर के रह गईं। लेकिन सामान्य तौर पर मैं मान लेता हूं अपने आप में कि जो सबसे पहले प्रकाशित हुई, वो पहली कविता हुई। और जो बाद में प्रकाशित हुई, वो दूसरी कविता हुई।' वह कहते थे- 'पहली रचना तो लिखित में बची हुई कभी होती नहीं। जब लिखित में होने की प्रक्रिया होती है तो कोई दूसरी रचना, उस पहली रचना को खारिज कर देती है। खुद रचना को खारिज करना, हमेशा दूसरों के द्वारा खारिज होने से अपनी रचना को बचाने का एक तरीका होता है।'

65 सालों से भी अधिक समय से लिखते हुए भी वो कहते थे- 'मैं जब भी कोई नई कविता लिखता हूं तो पहली कविता की तरह ही लिखता हूं। कविता लिखते समय हर बार ज़ेहन में यही बात रहती है कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ तो कभी नहीं लिखा। सर्वश्रेष्ठ तो हमेशा लिखा जाना बचा हुआ है।' यही उनके लिखे का रहस्य था। वे हर बार शुरुआत करते थे, जैसे अभी-अभी लिखना सीखा हो। वह बताते थे, 'घर में लिखने का वातावरण था। संयुक्त परिवार था। माँ, जमालपुर जो कि अब बांग्लादेश में है; से नौ वर्ष की उम्र में अपने भाइयों के साथ कानपुर लौट कर आ गई थीं। उस नौ वर्ष की उम्र में वे बंगाल का संस्कार, जितना भी हो, एक पोटली में बांध कर ले आई थीं। और वही पोटली हर बार मेरे सामने खुल जाती थी। मैंने उन्हीं से रवींद्रनाथ टैगोर, शरतचंद्र और बंकिम के नाम सुने।'

उनकी जीवन-कथा में हिन्दी के बड़े कवि, गजानन माधव मुक्तिबोध का स्थान व्यक्तिगत भी था और साहित्यिक भी। राजनांदगांव में मुक्तिबोध से हुई पहली भेंट की स्मृति विनोद कुमार शुक्ल की आवाज़ में झिलमिलाती थी। वह कहते थे, 'वही तो एक ऐसी याद है, जो लगता है कि मुझमें ठहर गई है। मैं मुक्तिबोध को, तब के पहली बार के देखे हुए को, अभी तक उसी तरह याद करता हूं।' विनोद जी बताते थे, 'जब मैं मुक्तिबोध से मिलने के लिए गया तो शाम का समय था, उन्होंने कहा- आता हूं। फिर उसके बाद वह आए. एक धुंधलका सा अंधेरा हो चुका था, लेकिन कुछ पहले की तैयारी में और कुछ उस धुंधलके की तैयारी में वो एक जलता हुआ कंदील लेकर आए। उस जलते हुए कंदील के साथ ऐसा लगता था, जैसे किसी के साथ कुत्ता दुम हिलाते हुए चलता है। एक ही रचना, जो जीवन की तरह फैलती गई उस कंदील के उजाले में मुक्तिबोध आए और मेरी उनसे मुलाक़ात हुई।'

मुक्तिबोध ने ही विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं को सबसे पहले दिल्ली के 'कृति' पत्रिका के संपादक श्रीकांत वर्मा तक पहुँचाया। उन्हीं आठ कविताओं का प्रकाशन, विनोद कुमार शुक्ल के लिए 'पहली कविता' बनकर उभरा। उन्हें मुक्तिबोध की सुनाई गई पहली कविता की भी याद हमेशा बनी रही, 'मुक्तिबोध ने पहली बार मुझे अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाईं। उस दिन घर पहुँचते-पहुँचते देर हो चुकी थी। उनमें से एक कविता आकाश के बारे में एक लंबी कविता थी। ऐसा लग रहा था मानो समय की डोर से बँधी कोई पतंग, दुनिया के ऊपर उड़ रही हो और उसे खूब डोर दी गई हो। मुक्तिबोध ने कविता पढ़कर मुझे डोरी थमा दी। विनोद कुमार शुक्ल कहते थे, 'ज़िंदगी एक है। बस वही बार-बार अलग रूप में लिखी जाती है।'

उन्हें ध्यान से पढ़ते हुए, यह बात थोड़ी साफ होती है कि उनकी कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, सब एक ही साँस की भिन्न लय हैं। उन्होंने एक बातचीत में कहा था- 'ज़िंदगी एक है और हम अपनी ज़िंदगी के अनुभव को आगे-पीछे तो कर सकते हैं लेकिन उसको पूरी तरह से हटा तो नहीं सकते हैं। तो ये एक सिलसिला है। असल में लिखा हुआ सारा कुछ जो है, हमारा भोगा हुआ होता है। संदर्भ जैसे पूरा संसार बाहरी होता है, दूसरे लोग होते हैं, दूसरे लोगों के साथ में हम होते हैं। हम लोग की तरह, मैं एक अकेला दूसरों की बातों को महसूसता हूं। किसी को कविता के रूप में लिख दिया, किसी को कहानी के रुप में लिख दिया। किसी को उपन्यास के रूप में लिख दिया।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

इसरो ने लांच किया 'भारी' वजनी अमेरिकी सैटेलाइट

● भारत से भेजा गया यह सबसे भारी उपग्रह, 6100 केजी है वजन

मिलेगी बड़ी सुविधा,धरती पर कहीं से भी वीडियो कॉल कर सकेंगे

श्रीहरिकोटा (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने बुधवार को एक विशेष कॉमर्शियल मिशन के तहत अपने सबसे भारी प्रक्षेपण यान एलवीएम3-एम6 के जरिए एक अमेरिकी सैटेलाइट को लॉन्च किया। इसरो ने इसकी जानकारी देते हुए कहा है कि अमेरिकी कम्युनिकेशन सैटेलाइट ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 को सफलतापूर्वक ऑर्बिट में स्थापित कर दिया गया है। इसमें दो शक्तिशाली एस 200 सॉलिड बूस्टर लगे हैं। 24 घंटे की उलटी गिनती पूरी होने के बाद 43.5 मीटर ऊंचा रॉकेट सुबह 8.55 बजे श्रीहरिकोटा स्थित दूसरे लॉन्च पैड से शानदार तरीके से उड़ान भरा। अंतरिक्ष एजेंसी ने बताया कि 6,100 किलोग्राम वजनी यह

संचार उपग्रह एलवीएम3 के प्रक्षेपण इतिहास में पृथ्वी की निम्न कक्षा (एलईओ) में स्थापित किया जाने वाला अब तक सबसे भारी पेलोड बन गया। इससे पहले सबसे भारी पेलोड एलवीएम3-एम5 संचार उपग्रह-03 था, जिसका वजन करीब 4,400 किलोग्राम था और जिसे इसरो ने दो नवंबर को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया था। बुधवार का यह मिशन 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' (एनएसआईएल) और अमेरिका स्थित एएसटी स्पेसमोबाइल के बीच हुए वाणिज्यिक समझौते के तहत संचालित किया गया। एनएसआईएल, इसरो की वाणिज्यिक इकाई है। प्रक्षेपण से इसरो प्रमुख वी. नारायणन ने 22 दिसंबर को तिरुमला में श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पूजा अर्चना की थी। यह ऐतिहासिक मिशन अगली पीढ़ी का ऐसा संचार उपग्रह स्थापित करेगा।

आकाश एनजी मिसाइल डिफेंस सिस्टम का टेस्ट हो गया सफल

● 80 किमी तक के टारगेट को तबाह कर सकता है, एक साथ 10+हमले रोकने में सक्षम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने मंगलवार को आकाश मिसाइल डिफेंस सिस्टम के एडवांस्ड वर्जन आकाश नेक्स्ट जेनरेशन (आकाश-एनजी) का ओडिशा के चांदीपुर इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज में सफल ट्रायल किया। इसे देश की स्वदेशी एयर डिफेंस ताकत को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है। डीआरडीओ के मुताबिक, ट्रायल के दौरान आकाश-एनजी ने अलग-अलग दूरी और ऊंचाई पर मौजूद हवाई लक्ष्यों को सटीक तरीके से नष्ट किया। इसमें सीमा के पास कम ऊंचाई पर उड़ने वाले और लंबी दूरी पर ज्यादा ऊंचाई वाले लक्ष्य भी शामिल थे। यह मिसाइल डिफेंस सिस्टम फाइटर जेट, क्रूज मिसाइल, ड्रोन और राकेट को 80 किमी दूर तक और आकाश में 20 किमी ऊंचाई तक निशाना बना सकता है। इसके पास एक साथ कई हमले यानी 10 टारगेट को तबाह करने की क्षमता है। अधिकारियों के मुताबिक, आकाश-एनजी मिसाइल सिस्टम एक आधुनिक और ताकतवर एयर डिफेंस सिस्टम है। इसे डीआरडीओ ने विकसित किया है और इसका निर्माण कंपनी ने किया है।

शरद की सुबह

मैंने क्रिसमस के दिन घंटियों
की आवाज सुनी
उनके पुराने, जाने-पहचाने क्रिसमस
गीत बजते हैं,और जंगली और मीठा
शब्द दोहराए जाते हैं
धरती पर शांति हो, मनुष्यों के प्रति
सद्भावना हो!
और सोचा कि जैसे-जैसे
वह दिन आ गया,
संपूर्ण ईसाई जगत के घंटाघर
आगे बढ़ता रहा
अटूट गीत
धरती पर शांति हो, मनुष्यों के
प्रति सद्भावना हो!
जब तक वह बजता हुआ, गाता हुआ
अपने रास्ते पर चलता रहा,
दुनिया रात से दिन में परिवर्तित
होती है।
एक आवाज, एक झंकार,
एक उदात्त मंत्र
धरती पर शांति हो, मनुष्यों के प्रति
सद्भावना हो!

हेनरी वड्सवर्थ लांगफेलो

जंगल में पेड़ों की कटाई से चल रहा टेरर नेटवर्क !

● एमपी में सुरक्षा एजेंसियों की जांच में बड़ा खुलासा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाकों में लकड़ी की तस्करी बड़े पैमानों पर हो रही है। अब यह बात सामने आई है कि जंगलों की लूट से होने वाली कमाई का इस्तेमाल टेरर फंडिंग के लिए किया जा रहा है। इस मामले की जांच में ईडी, एनआईए, राज्य की एटीएस और कई राज्यों के वन विभाग शामिल है। इसे पूरे रैकेट को ऑपरेट गुजरात के गोधरा का रहने वाला मोहन ताहिर कर रहा है उसने बीते तीन सालों में करीब 200 करोड़ रुपए की लकड़ी की अवैध कटाई की है। साथ ही तस्करी किया है।

खैर की लकड़ी का इस्तेमाल कत्था बनाने के लिए किया जाता है। बाजार में इसकी अनुमानित कीमत 700 करोड़ रुपए तक पहुंच सकती है। जांच के दौरान यह बात सामने आई है कि ताहिर एमपी के

अलीराजपुर जिले के मलवाई गांव में एक निजी जमीन पर शालिमार एंटरप्राइजेज के नाम से सीक्रेट डिपो बना रहा था। इसका मैनेजमेंट आरिफ अली मकरानी करता था, जिससे पूछताछ की जा रही है।

गुजरात में पकड़ा गया अवैध लकड़ी से लदा ट्रक- यह मामला जून 2024 में पहली बार तब संज्ञान में आया, जब गुजरात में अवैध लकड़ी से लदा एक ट्रक पकड़ा गया।

ईडी की छापेमारी

हाल ही में, 11 दिसंबर 2025 को, ईडी ने महाराष्ट्र, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, झारखंड, गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के 40 ठिकानों पर छापेमारी की। इनमें मुंबई के पास पडघा-बोरीवली इलाका भी शामिल था। मनी लॉन्ड्रिंग के तहत की गई इन छापों में एक आतंकवादी फंडिंग नेटवर्क का खुलासा हुआ।

भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेई की जयंती पर ग्वालियर में होगा विशेष आयोजन : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश को मिल रहीं औद्योगिक विकास की बड़ी सौगातें

● केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह प्रदेश के 2 लाख करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का करेंगे लोकार्पण एवं भूमि-पूजन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केन्द्रीय मंत्री श्री शाह का प्रदेश आगमन पर किया अभिनंदन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जयंती के अवसर पर ग्वालियर में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया है। राज्य सरकार ने अटलजी की जयंती को सार्थक करते हुए कल 25 दिसंबर को गरीब, किसान, युवा और नारी कल्याण के दृष्टिगत अनेक कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इस अवसर पर प्रदेश में उद्योग एवं व्यापार गतिविधियों के विकास और विस्तार के लिए राज्य में लगभग 2 लाख करोड़ से अधिक के विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि पूजन किए जाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रदेश को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए कई बड़ी सौगातें दी हैं। प्रदेश के लिए प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ग्वालियर के आयोजन में पधार रहे हैं। यह आयोजन प्रदेश सरकार के संकल्प को आगे बढ़ने वाला सिद्ध होगा। केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शाह विभिन्न योजनों के हितग्राहियों, बेरोजगार युवाओं और निवेशकों को अनेक सौगातें भी प्रदान करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश सरकार विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने और भारत को विश्व की तीसरी सबसे सशक्त अर्थव्यवस्था बनाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री श्री मोदी का हृदय से आभार मानते हुए मध्यप्रदेश आगमन पर केंद्रीय गृहमंत्री श्री शाह का अभिनंदन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री निवास से बुधवार को मीडिया को जारी संदेश में यह विचार व्यक्त किए।

उद्योग एवं रोजगार वर्ष में आया बंपर निवेश, बढ़े रोजगार के अवसर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष के रूप में घोषित किया है। इसके अंतर्गत राज्य के विभिन्न जिलों एवं देश-विदेश में बिजनेस समिट आयोजित कर उद्योपतियों को प्रदेश में निवेश के लिए प्रेरित और आमंत्रित किया गया। हमारी सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप युवाओं के लिए रोजगार के अनेकों अवसर सृजित हुए हैं। प्रदेश सरकार सभी प्रकार के उद्योग एवं व्यापार को हर संभव सहायता प्रदान कर रही है।

उद्योग एवं रोजगार वर्ष में राज्य में लगभग 8.5 लाख करोड़ के औद्योगिक विकास कार्यों को धरातल पर लाने का कार्य प्रारंभ हुआ है। यह प्रसन्नता का विषय है कि अब तक 6.5 लाख करोड़ लागत के औद्योगिक विकास कार्य पूर्ण हो रहे हैं, इनमें शामिल कई इकाईयों ने उत्पादन भी प्रारंभ कर दिया है।

राजस्थान में बॉर्डर के पास अब बनेगा नया एयरबेस

● पाकिस्तान के 3 बड़े सुरक्षा ठिकानों पर सेकेंड्स में पहुंच जाएंगे फाइटर जेट

जोधपुर (एजेंसी)। राजस्थान से लगते भारत-पाक सीमा पर अब एयरबेस बनने का रास्ता खुल गया है। नए एयरबेस से पाकिस्तान के 3 बड़े एयरबेस तक भारतीय फाइटर जेट जल्दी पहुंच सकते हैं। नए एयरबेस के लिए सादुलशहर (श्रीगंगानगर) तहसील के आस-पास के क्षेत्र की जमीन के अधिग्रहण का रास्ता साफ हो गया है। दरअसल, अधिग्रहण के विरोध में 58 किसानों और जमीन मालिकों ने याचिका लगाई थी। राजस्थान हाईकोर्ट (जोधपुर) ने 18 दिसंबर को हुई सुनवाई में सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया। जस्टिस डॉ. नूपुर भाटी ने फॉरवर्ड कंपोजिट एविएशन बेस के लिए भूमि अधिग्रहण को सही ठहराया है। हाईकोर्ट के अनुसार

- यह रिट याचिका केवल तकनीकी आपत्तियों के सहारे राष्ट्रीय महत्व की रक्षा परियोजना को पटरी से उतारने की कोशिश है। कोर्ट ने अपने रिपोर्टेबल जजमेंट में स्पष्ट किया कि सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं पर बात नहीं होगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 27 °c | न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 25 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मुंबई 'बचाने' एक साथ आए उद्धव और राज

- बीएमसी चुनाव को लेकर किया गठबंधन का ऐलान
- दोनों ने कहा-मुंबई को तोड़ने वालों को खत्म कर देंगे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में लंबे समय से ठाकरे भाईयों के राजनीतिक तौर एक साथ आने की चर्चा चल रही थी। महाराष्ट्र, मराठी मुद्दों पर एक साथ आए उद्धव और राज ठाकरे ने अब राजनीतिक तौर पर गठबंधन का फैसला किया है। इसके तहत दोनों भाइयों ने मुंबई बीएमसी के साथ राज्य की दूसरी महानगर पालिकाओं के चुनाव मिलकर लड़ने का फैसला किया है। दोनों भाई आज मुंबई के वरली स्थित होटल ब्लू सी में गठबंधन का औपचारिक ऐलान किया। इस मौके पर उद्धव ठाकरे ने बिना नाम लिए दिल्ली का जिक्र करके बीजेपी पर हमला

बोला। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र से मुंबई को तोड़ने की कोशिश हो रही है। राज ठाकरे ने कहा कि मुंबई का मेयर मराठी होगा औ हमारा होगा। दोनों भाइयों ने एक ही माइक से प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित किया। ठाकरे ने कहा कि मुंबई को तोड़ने वालों को खत्म कर देंगे। इस मौके पर पूरा ठाकरे परिवार मौजूद रहा। शिवसेना और मनसे के गठबंधन के ऐलान के मौके पर ठाकरे भाइयों ने जहां एकजुता दिखाई तो वहीं उनके परिवार के सदस्य भी मौजूद रहे। राज ठाकरे की पत्नी जहां आदित्य के पास खड़ी हुईं तो वहीं रश्मि ठाकरे ने अमित ठाकरे के साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाई।

हिंदू-मुस्लिम समस्या के लिए सिर्फ कांग्रेस जिम्मेदार : गडकरी

- बोले- पार्टी ने सेक्युलरिज्म की गलत व्याख्या की

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने मंगलवार को कहा, देश में आज भी जो हिंदू-मुस्लिम से जुड़ी समस्याएं दिखती हैं, उनकी वजह कांग्रेस की सेक्युलरिज्म की सोच और वोट बैंक की राजनीति है। कांग्रेस ने सेक्युलरिज्म की गलत व्याख्या की। गडकरी के मुताबिक, सेक्युलर का अर्थ धर्मनिरपेक्षता या किसी एक वर्ग का तुष्टिकरण करना नहीं है। इसका सही मतलब सर्व धर्म समभाव होता है, यानी सभी धर्मों को समान सम्मान

और सबको न्याय और सभी के साथ बराबरी का व्यवहार करना है। गडकरी दिल्ली में राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव देवनानी की किताब सनातन संस्कृति की अटल दृष्टि के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। इस दौरान उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन भी मौजूद थे। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के बयान को दोहराते हुए कहा कि भारत पहले भी सेक्युलर था, आज भी है और हमेशा रहेगा। यह बीजेपी-संघ की वजह से नहीं, बल्कि भारतीय, हिंदू और सनातन संस्कृति की वजह से है, जो विश्व का कल्याण सिखाती है भारतीय संस्कृति सहिष्णु, करुणामय और सभी को साथ लेकर चलने वाली है और यहां नष्ट करने का उदाहरण नहीं मिलता।

अब 220 किलोमीटर की रफ्तार से दौड़ेगी ट्रेन!

जल्द तैयार होने वाला है पहला हाई-स्पीड रेलवे ट्रैक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे ट्रेनों के लिए अपना पहला डेडिकेटेड हाई-स्पीड टेस्ट ट्रैक बना रहा है। इसके वित्तीय वर्ष 2025-26 के अंत तक पूरा होने की उम्मीद है। इस प्रोजेक्ट को भारतीय रेलवे की रिसर्च संस्था रिसर्च डिजाइन एंड स्टैंडर्ड्स ऑर्गनाइजेशन 967 करोड़ रुपये की लागत से डेवलप कर रही है। यह टेस्ट ट्रैक जयपुर से करीब 70 किलोमीटर दूर, जोधपुर डिवीजन के नावा इलाके में गुढ़ा और थथाना मिठरी के बीच बनाया जा रहा है। यह प्रोजेक्ट नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे के एडमिनिस्ट्रेटिव अधिकार क्षेत्र में आता है। नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे के चीफ पब्लिक रिलेशन्स ऑफीसर शशि किरण ने इस डेवलपमेंट को कन्फर्म किया। उन्होंने कहा कि रिसर्च डिजाइन एंड स्टैंडर्ड्स ऑर्गनाइजेशन डेडिकेटेड हाई-स्पीड टेस्ट ट्रैक पर रोलिंग स्टॉक की पूरी टेस्टिंग करेगा। किरण ने बताया कि कुल 64 किमी लंबे प्रोजेक्ट में से लगभग 58 किमी पहले ही पूरा हो चुका है और पूरे प्रोजेक्ट को मार्च 2026 तक पूरा करने का टारगेट है। सीपीआरओ के अनुसार, 'इंडियन रेलवे रोलिंग स्टॉक की पूरी टेस्टिंग के लिए देश का पहला रिसर्च डिजाइन्स एंड स्टैंडर्ड्स ऑर्गनाइजेशन डेडिकेटेड टेस्ट ट्रैक बना रहा है। यह 64 किमी का ट्रैक नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे के जोधपुर डिवीजन में गुढ़ा और थथाना मिठरी के बीच 967 करोड़ रुपये की लागत से बनाया जा रहा है। अभी प्रोजेक्ट का लगभग 58 किलोमीटर पूरा हो चुका है। पूरे प्रोजेक्ट को मार्च 2026 तक पूरा करने का टारगेट है।' किरण ने आगे बताया कि डेडिकेटेड हाई-स्पीड टेस्ट ट्रैक को 220 किमी की मैक्सिमम स्पीड को सपोर्ट करने के लिए डेवलप किया जा रहा है।

लापता ऑटो चालक का शव मिला

पास मिले नशीले इंजेक्शन, 24 घंटे से लापता था

भोपाल (नप्र)। भोपाल की करोंद मंडी स्थित ब्रिज के पास मैदान से बुधवार की दोपहर को पुलिस ने लापता ऑटो चालक का शव बरामद किया है। बॉडी के पास नशीले इंजेक्शन पड़े मिले हैं। पुलिस का अनुमान है कि नशे के ओवर डोज के कारण युवक की मौत हुई है।

पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। बॉडी को पीएम के लिए मर्चुरी भेजा गया है। पुलिस के मुताबिक मृतक हैदर अली (35) पुत्र जमालउद्दीन हाउसिंग बोर्ड करोंद में रहता था। मंगलवार की दोपहर को वह ऑटो से निकला था।

रात नौ बजे तक कई कॉल करने पर भी उसने कॉल नहीं रिसीव किया था। देर रात परिजनों ने थाने में शिकायत की थी। बुधवार की सुबह से परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। इसी बीच पुलिस ने परिजनों को एक लाश मिलने के बाद शिनाख्त करने के लिए बुलाया।

परिजनों ने मौके पर पहुंचकर शिनाख्त की- मौके पर पहुंचे परिजनों ने बॉडी की पहचान की। पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई के बाद बॉडी को पीएम के लिए रवाना किया। पोस्टमॉर्टम के बाद पुलिस शव परिजनों के हवाले करेगी। पुलिस का कहना है कि बॉडी के पास ही नशीले इंजेक्शन मिले हैं। नशे के ओवर डोज के कारण मौत होने का अनुमान है। हालांकि पीएम रिपोर्ट मिलने के बाद मौत के सही कारणों का खुलासा हो सकेगा।

नवविवाहिता से पड़ोसी ने रेप किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के निशातपुरा इलाके में रहने वाली 20 साल की नवविवाहिता के साथ पड़ोसी ने रेप किया। आरोपी सुई और धागा मांगने उसके घर पहुंचा था। जहां महिला को अकेला देखकर उसके साथ ज्यादती की। पीड़िता के शोर मचाने पर उसका भांजा मौके पर पहुंचा। जिसे देखकर आरोपी भाग निकला। पुलिस ने रेप का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आरोपी युवक की तलाश की जा रही है। पुलिस के मुताबिक 20 वर्षीय महिला मूल रूप से ब्यावरा जिला राजगढ़ की रहने वाली है। उसकी शादी निशातपुरा इलाके में रहने वाले एक युवक से हुई है।

आरोपी महिला के पीछे-पीछे घर में चला गया- महिला ने पुलिस को बताया कि मंगलवार की शाम को घर में अकेली थी। तभी पड़ोस में रहने वाला 44 वर्षीय भाऊ सिंह उसके घर पहुंचा। आरोपी ने उससे सुई और धागा मांगा, महिला इसे लेने के लिए घर के अंदर स्थित एक कमरे में गई। आरोपी भी पीछे-पीछे वहीं पहुंच गया। उसने महिला के साथ डरा और धमकाकर रेप किया। पीड़िता ने शोर मचाया, इसी बीच एक महिला का भांजा घर पहुंच गया। जिसे देखकर आरोपी वहां से भाग निकला। जिसके बाद पीड़िता ने शिकायत थाने में पहुंचकर की। जांच के बाद बुधवार सुबह पुलिस ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

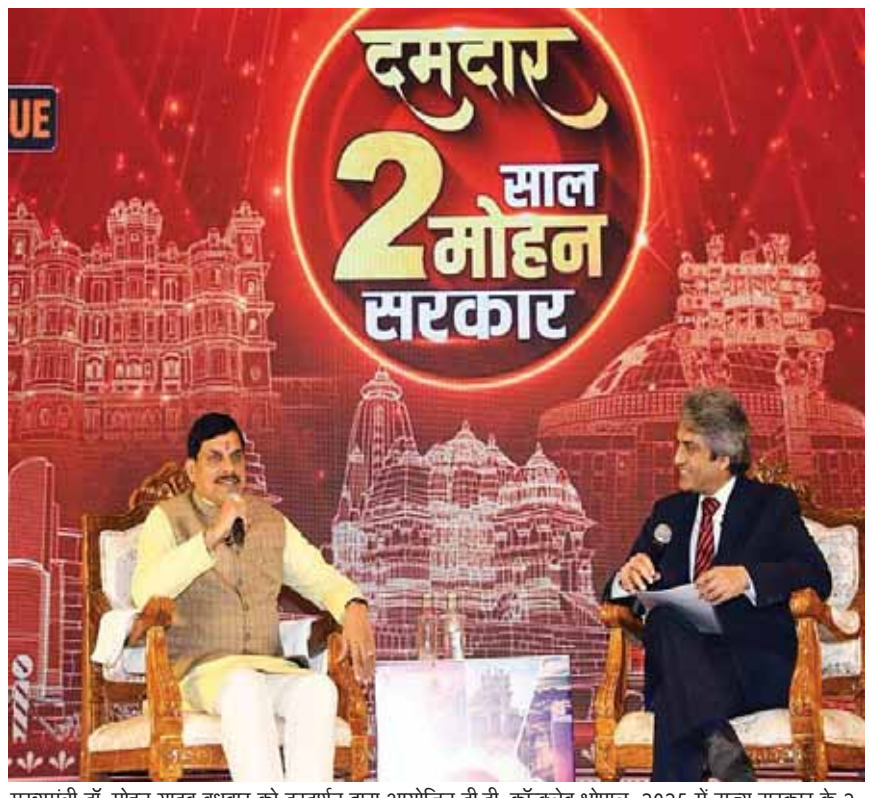

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बुधवार को दूरदर्शन द्वारा आयोजित डी.डी. कॉन्क्लेव भोपाल-2025 में राज्य सरकार के 2 वर्षों पर आधारित विशेष सत्र में सहभागिता की।

मुख्यमंत्री ने ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 स्पेसक्राफ्ट के सफल प्रक्षेपण पर इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई दी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा एलवीएम-3 एम 6 रॉकेट के माध्यम से ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 स्पेसक्राफ्ट के सफल प्रक्षेपण पर राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी के वैज्ञानिकों को बधाई दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत तेजी से अंतरिक्ष महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इसरो ने एक बार फिर अंतरिक्ष में 'नए भारत' का परचम लहराया है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि से विश्व, भारत की वैज्ञानिक क्षमता, कौशल और आत्मविश्वास से परिचित हुआ है।

डीमर्जर की मंजूरी के बाद वेदांता के शेयर ने बनाया नया रिकॉर्ड

बालकोनगर (एजेंसी)। वेदांता लिमिटेड के शेयरों ने बुधवार को एनएसई पर इंट्रा-डे कारोबार के दौरान 599.80 का नया ऑल-टाइम हाई स्तर छू लिया। कंपनी का शेयर करीब 2 प्रतिशत की बढ़त के साथ अपने 52-सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। बीते एक महीने में वेदांता के शेयरों में लगभग 20 प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई है, जिसका प्रमुख कारण कंपनी की डीमर्जर योजना को लेकर सकारात्मक उम्मीदें हैं। ब्रोकरेज फर्म्स वेदांता समूह के रणनीतिक क्षमता विस्तार योजनाओं को लेकर आशावादी हैं।

एल्यूमिनियम, जिंक और सिल्वर की मांग, नए उपयोगों में वृद्धि और प्रचालन दक्षता में सुधार से कंपनी को लाभ मिलने की संभावना जताई जा रही है। वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने भी चांदी को लेकर भरोसा जताया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि इस साल चांदी ने सोने की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है। डॉलर के लिहाज से चांदी में अब तक 125 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है, जबकि सोने में 63 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। उनका कहना है कि चांदी की यह कहानी अभी शुरुआत भर है। कंपनी के शेयरों में यह तेजी लगातार छठे कारोबारी सत्र में देखने को मिली है। 16 दिसंबर को नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) द्वारा वेदांता की लंबे समय से प्रतीक्षित डीमर्जर योजना को मंजूरी दिए जाने के बाद निवेशकों का भरोसा और मजबूत हुआ है। इस पुनर्गठन योजना के तहत वेदांता लिमिटेड को पांच अलग-अलग सूचीबद्ध कंपनियों में विभाजित किया जाएगा, जिनमें वेदांता एल्युमिनियम, वेदांता ऑयल एंड गैस, वेदांता पावर, वेदांता आयरन एंड स्टील और एक पुनर्गठित वेदांता लिमिटेड शामिल हैं।इससे पहले दिसंबर में एसएंडपी ग्लोबल ने वेदांता की पैरेंट कंपनी वेदांता रिसोर्सेज की रेटिंग को बरकरार रखते हुए आउटलुक को 'स्टेबल' से बढ़ाकर 'पॉजिटिव' कर दिया था। एजेंसी ने इसके पीछे बेहतर आय दृश्यता, लागत में कमी और अनुकूल धातु कीमतों को वजह बताया है।ब्लूमबर्ग के आंकड़ों के अनुसार वेदांता पर नजर रखने वाले 14 विश्लेषकों में से 10 ने शेयर को 'खरीदने' की सलाह दी है, जबकि 4 ने 'होल्ड' की रेटिंग दी है। ब्रोकरेज फर्म नुवामा ने इसका उच्चतम लक्ष्य मूल्य 686 तय किया है। पिछले छह महीनों में वेदांता के शेयरों ने 33 प्रतिशत से अधिक की छलांग लगाकर बाजार से बेहतर प्रदर्शन किया है। इसी अवधि में एनएसई निफ्टी करीब 5 प्रतिशत और निफ्टी मेटल इंडेक्स लगभग 15 प्रतिशत चढ़ा है।

उस्मान हादी की हत्या यूनुस सरकार ने करवाई

- भाई का आरोप-ऐसा चुनाव रोकने के लिए किया
- बांग्लादेश में अगले 2 महीने में इलेक्शन होने हैं

ढाका (एजेंसी)। भारत और शेख हसीना विरोधी बांग्लादेशी नेता उस्मान हादी की हत्या के मामले में उनके भाई शरीफ उमर हादी ने यूनुस सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उमर हादी ने कहा कि सरकार के अंदर कुछ ताकतें ही उस्मान हादी की हत्या के पीछे है। वो आने वाले राष्ट्रीय चुनाव को पटरी से उतारना चाहते हैं। उमर ने यह आरोप मंगलवार को शाहबाग में आयोजित इंकलाब मंच के शहीदी शपथ कार्यक्रम में लगाए। उमर हादी ने यूनुस सरकार पर निशाना साधते हुए कहा,तुम्ही लोगों ने उस्मान हादी को मरवाया है। अब इस मुद्दे को इस्तेमाल करके चुनाव को रोकने की कोशिश कर रहे हो। हादी को 12 दिसंबर को ढाका में गोली मार दी गई थी, जिसके बाद 18 दिसंबर को उनकी मौत हो गई।

भारत के 4 पड़ोसी देशों में सैन्य अड्डा बनाना चाहता है चीन

पेंटागन की रिपोर्ट में हुआ बड़ा खुलासा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के रक्षा मंत्रालय पेंटागन ने अपनी एक सालाना रिपोर्ट में भारत के 4 पड़ोसी देशों में चीन सैन्य तैयारी को लेकर एक डराने वाली रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में पेंटागन ने खुलासा किया है कि पाकिस्तान के ग्वादर में नेवल बेस बना रहा चीन अब बांग्लादेश में भी सैन्य ठिकाना बनाने पर विचार कर रहा है। अमेरिकी रिपोर्ट में कहा गया है कि चीनी सेना पीएलए बहुत सक्रियता के सा सैन्य सुविधाओं को बढ़ाने पर विचार कर रही है।

चीन और बांग्लादेश में सैन्य संबंध काफी मजबूत

वहीं अमेरिकी रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश चीन से जे-10 सी फाइटर जेट खरीदने की इच्छा रखता है। यह वही चीनी लड़ाकू विमान है जिसका पाकिस्तान ने भारत के राफेल के खिलाफ इस्तेमाल किया था। बांग्लादेश शेख हसीना के जमाने से ही चीन से अपनी सैन्य दोस्ती को मजबूत कर रहा था। बांग्लादेश चीन के सैन्य वाहनों और जे-5 लाइट टैंक का बड़ा ग्राहक है। साल 2024 में चीन ने बांग्लादेश को दो युद्धपोत सौंपा था।

खेल और सहकारिता में हुई अभूतपूर्व प्रगति : मंत्री श्री सारंग

खिलाड़ियों का सम्मान, युवा सशक्तिकरण और किसान-ग्रामीणों के लिए सहकारी क्रांति

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की डबल इंजन सरकार की परिकल्पना जहाँ केंद्र और राज्य एक साझा लक्ष्य, साझा गति और साझा परिणाम के साथ काम करते हैं, आज मध्यप्रदेश में ज़मीन पर साकार रूप ले रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सक्षम नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने बीते दो वर्षों में सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। यह बात सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने बुधवार को अपेक्स बैंक समन्वय भवन में आयोजित प्रेसवार्ता में कही।

खेल एवं युवा कल्याण विभाग-प्रदेश का गौरव, देश में नई पहचान- मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रदेश के खिलाड़ी आज राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर पदक अर्जित कर देश और प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं। वर्ष 2024 में पेरिस (फ्रांस) में आयोजित ओलम्पिक व पैरा ओलम्पिक 2024 में प्रदेश के खिलाड़ियों ने प्रतिभागिता कर पदक अर्जित किये। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर भी मध्यप्रदेश ने खेलों में निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। खेलो इंडिया यूथ गेम्स, तमिलनाडु में भी प्रदेश के खिलाड़ियों ने 29 पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इसी प्रकार 38वें नेशनल गेम्स, उत्तराखण्ड में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने 67 पदक अर्जित कर राज्यों में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पदक तालिका में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ- वर्ष 2024-25 की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए मंत्री श्री सारंग ने बताया कि प्रदेश के खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कुल 57 पदक तथा राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में 391 पदक अर्जित किए। हॉकी एशिया कप 2025, 16वीं एशियन शूटिंग चैंपियनशिप कजाकिस्तान, खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल श्रीनगर एवं एशियन केनो स्लालम चैंपियनशिप चीन में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर प्रदेश को शीर्ष राज्यों की श्रेणी में स्थापित किया है।

प्रदेश के खिलाड़ियों ने बनाए नये राष्ट्रीय रिकॉर्ड- प्रदेश के खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर न केवल निरंतर पदक अर्जित कर रहे हैं, बल्कि नए राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाकर मध्यप्रदेश की खेल प्रतिभा को नई पहचान दिला रहे हैं। पोल वॉल्ट में देव मीणा ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में रिकॉर्ड प्रदर्शन कर स्वर्ण पदक हासिल किया है। शूटिंग में ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर ने 50 मीटर राइफल स्पर्धा में रिकॉर्ड स्कोर के साथ राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट उपलब्धि दर्ज की है। वहीं शॉट पुट में समरदीप सिंह ने अपने दमदार प्रदर्शन से राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक जीतकर प्रदेश का गौरव बढ़ाया है।

जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप कांस्य विजेता टीम में प्रदेश के 3 खिलाड़ी- मंत्री श्री सारंग ने बताया कि तमिलनाडु में आयोजित एफआईएच जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप-2025 में भारतीय टीम ने अर्जेंटीना को 4-2 से पराजित कर पहली बार कांस्य पदक जीतकर ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने कहा कि इस गौरवपूर्ण सफलता में मध्यप्रदेश पुरुष हॉकी अकादमी, भोपाल के प्रतिभाशाली खिलाड़ी अंकित पाल, तलैम प्रियोबर्ता एवं थोनाओजाम इंगालेंबा लुवांग के उत्कृष्ट प्रदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ओलम्पिक और एशियन गेम्स पदक विजेताओं को बनाएंगे राजपत्रित अधिकारी

खिलाड़ियों के सम्मान और भविष्य सुरक्षा पर सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए मंत्री श्री सारंग ने बताया कि प्रदेश के खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार, एकलव्य, विक्रम, विश्वामित्र और लाइफटाइम अचीवमेंट जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

सेंट्रल जेल भोपाल में बंदी की संदिग्ध मौत

● रेप के केस में सात महीने से बंद था, आखिरी मुलाकात में बहन से बोला- कब बाहर आऊंगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल सेंट्रल जेल में बंद विचाराधीन बंदी की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। वह नाबालिग से रेप के केस में जेल में बंद था। बहन से आखिरी बार 8 दिन पहले उसकी मुलाकात हुई थी। तब उसने कब तक बाहर आने की बात पूछी थी। इसी के साथ सीने में तेज दर्द की बात कही थी। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि बेहोशी की हालत में सोमवार शाम को उसे हमीदिया अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां इलाज के दौरान बुधवार सुबह उसकी मौत हो गई। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस के मुताबिक रोशन पंथी (21) पुत्र भैयालाल पंथी विदिशा का रहने वाला था।

नाबालिग रिश्तेदार ने दर्ज कराई थी एफआईआर- छोला मंदिर थाना क्षेत्र में रहने वाली 16 साल की नाबालिग रिश्तेदार किशोरी ने उसके खिलाफ रेप का केस करीब सात महीने पहले दर्ज कराया था। आरोपी पर घर में घुसकर ज्यादती करने का आरोप था। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। तब से ही रोशन जेल में बंद था।

पिता बोले- बेटी से सीने में दर्द की शिकायत की थी- मृतक के पिता भैयालाल पंथी ने बताया कि आठ दिन पहले बड़ी बेटी ने बेटे से मुलाकात की थी। तब रोशन ने सीने में तेज दर्द की शिकायत की थी। उसे जेल में समय पर इलाज नहीं दिया गया। सोमवार शाम को एक पुलिसकर्मी ने कॉल कर बताया कि बेटे की तबीयत सीरियस है। भोपाल आ जाएं, यहां आए तो बेटा वेंटीलेटर पर मिला। उसके शरीर में हलचल नहीं थी। डॉक्टरों से पूछने पर बीमारी नहीं बताई गई। जवान बेटे की अचानक मौत से हम सदमें में हैं। मौत की निष्पक्ष जांच की जानी चाहिए।

भोपाल मेट्रो का फेज-2 जून 2028 तक...2 स्टेशन अंडरग्राउंड

● अब सुभाषनगर से करोंद तक चलेगी मेट्रो, भदभदा से रत्नागिरी के बीच भी दौड़ेगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ऑरेंज लाइन के प्रायोरिटी कॉरिडोर सुभाषनगर से एम्स के बीच मेट्रो दौड़ने लगी है। हर रोज 17 ट्रिप

हो रही है और 2 दिन में ही 10 हजार से ज्यादा लोग सफर कर चुके हैं। हालांकि, ये सफर अभी 6.22 किलोमीटर (कुल ट्रैक 7 किमी) का है, जबकि आगे 9.74 किलोमीटर तक मेट्रो सुभाषनगर से करोंद के बीच भी दौड़ेगी। यह ऑरेंज लाइन का फेज-2 है। दूसरा रूट ब्लू लाइन का भदभदा से रत्नागिरी तक है। इस पर भी काम की शुरुआत हो चुकी है। प्रायोरिटी कॉरिडोर में मेट्रो के कमर्शियल रन के बाद पूरा फोकस सेकेंड फेज पर है। इसका काम कहां से कहां तक होगा? क्या डेडलाइन है? कितना समय पूरा होने में लगेगा? मौजूदा काम की क्या स्थिति है? और शहरवासी करोंद से एम्स तक पूरे कुल 16.74 किमी रूट पर कब से सफर करना शुरू करेंगे?

न्यू ईयर पर भोपाल में 500 में घर में 'बार'

पार्टी के लिए 1 दिन का शराब लाइसेंस लेना पड़ेगा, फीस 2 लाख तक

भोपाल (नप्र)। भोपाल में सिर्फ 500 रुपए देकर घर में बार खोल सकते हैं। भोपाल का आबकारी विभाग पार्टी के लिए 1 दिन का शराब लाइसेंस देगा। जिन रेस्टोरेंट, होटल या गार्डन में 500 से 5 हजार तक भीड़ जुटेगी तो वहां लाइसेंस के बदले 25 हजार से 2 लाख रुपए तक देना पड़ेंगे। आबकारी विभाग ऑनलाइन लाइसेंस जारी करेगा। आबकारी की यह गाइडलाइन न्यू ईयर से पहले आई है। ऐसे में 31 दिसंबर और 1 जनवरी के दिन भी लोग लाइसेंस ले सकते हैं। बता दें कि शहर में अबकी बार भी न्यू ईयर के जश्न के लिए 350 से ज्यादा होटल और ढाबा संचालक एक दिन का शराब पिलाने का लाइसेंस ले सकते हैं। इसके लिए आबकारी विभाग ने बाकायदा लाइसेंस फीस समेत कई विषयों को लेकर गाइडलाइन भी जारी कर दी है। इस दायरे में स्वयं के मकान, सार्वजनिक स्थल, मैरिज गार्डन, होटल, रेस्टोरेंट को शामिल किया गया है।

इस तरह से दिए जाएंगे लाइसेंस

प्राइवेट जगह यानी, स्वयं के घर में यदि एक दिन की पार्टी करते हैं और उसमें अंग्रेजी शराब रहती है तो लाइसेंस फीस 500 रुपए लगेगी।

सार्वजनिक स्थल (लॉजिंग एवं बोर्डिंग शामिल नहीं) जैसे- विवाह स्थल, सामुदायिक भवन के लिए अंग्रेजी शराब की लाइसेंस फीस 5 हजार रुपए लगेगी।

लॉजिंग या बोर्डिंग की सुविधा वाले नियमित भोजन विक्रय के केंद्र जैसे- होटल और रेस्टोरेंट पर लाइसेंस फीस 10 हजार रुपए लगेगी। यही फीस पिछले साल भी रखी गई थी।

बच्चों ने सांता क्लॉज बनकर बाँटी खुशियाँ

भोपाल। सैपलिंग्स एवं स्वामी विवेकानंद इंग्लिश स्कूल द्वारा भोजपुर रोड समाज के वंचित वर्ग के बच्चों के साथ साझा करने और देखभाल की भावना को साकार करते हुए एक सराहनीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय ने निर्माण - परिवर्तन की ओर समिति के बच्चों के साथ मिलकर खुशियाँ बाँटी। निर्माण - परिवर्तन की ओर समिति एक सामाजिक संगठन है, जो भोपाल में वंचित बच्चों के लिए स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर कार्यरत है। वर्तमान में संस्था शहर के तीन विभिन्न केंद्रों पर 250 से अधिक बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही है।

कार्यक्रम के अंतर्गत सैपलिंग्स भोजपुर रोड द्वारा निर्माण संस्था के बच्चों को स्टेशनरी सामग्री, कपड़े, ऊनी वस्त्र, खिलौने एवं जूते वितरित किए गए। निर्माण संस्था के संस्थापक श्री नरेश मोटवानी और समाज सेविका मीता वाधवा के मार्गदर्शन में इंदुरिया चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री लक्ष्मी नारायण एवं प्रभा इंदुरिया ने बच्चों को उपहार प्रदान किए। कार्यक्रम के दौरान सैपलिंग्स भोजपुर रोड के बच्चे सांता क्लॉज बनकर आए और उन्होंने सभी बच्चों को उपहार बाँटे। सांता क्लॉज के आगमन से बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे और पूरे कार्यक्रम में उत्सव का माहौल बन गया।

योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता एवं निगरानी व्यवस्था को प्राथमिकता दी : मंत्री राजपूत

भोपाल (नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश शासन के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा विगत दो वर्षों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली, उपभोक्ता संरक्षण, किसान हित तथा गैस आपूर्ति के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की गई हैं। विभाग द्वारा योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता एवं तकनीक आधारित निगरानी व्यवस्था को प्राथमिकता दी गई है। खाद्य मंत्री श्री राजपूत राजधानी में विभाग की 2 वर्ष की उपलब्धियों को लेकर पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे।

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत प्रदेश के 5 करोड़ 25 लाख से अधिक हितग्राहियों को लगभग 22 हजार 800 करोड़ रुपये मूल्य का निःशुल्क खाद्यान्न वितरित किया गया। राशन वितरण प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री अन्न सेवा जागरूकता कार्यक्रम लागू किया गया, जिसके तहत हितग्राहियों को एसएमएस के माध्यम से राशन आगमन एवं वितरण की जानकारी दी जा रही है। इसके अतिरिक्त 26 जनवरी एवं 2 अक्टूबर को ग्राम सभाओं में पात्र हितग्राहियों की सूची का वाचन किया जा रहा है।

ई-केवाईसी प्रक्रिया में उल्लेखनीय प्रगति की गई

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि विभाग द्वारा ई-केवाईसी प्रक्रिया में उल्लेखनीय प्रगति की गई है।

प्रदेश में दो वर्ष में लगभग 1 करोड़ 70 लाख से अधिक हितग्राहियों का ई-केवाईसी सत्यापन पूर्ण किया जा चुका है। अब तक 4 करोड़ 97 लाख हितग्राहियों के ई-केवाईसी कराये जा चुके हैं। इस तरह से अब तक लगभग 93 प्रतिशत ई-केवाईसी पूर्ण हो चुके हैं। बायोमेट्रिक के साथ-साथ फेस ऑथेंटिकेशन के माध्यम से भी ई-केवाईसी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों, 80 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धों एवं दिव्यांगजनों सहित लगभग 15 लाख हितग्राहियों को ई-केवाईसी से छूट प्रदान की गई है। साथ ही 14 लाख नए पात्र हितग्राहियों को जोड़कर पात्रता पर्ची जारी की गई है।

वन नेशन-वन राशन कार्ड योजना में निःशुल्क राशन- खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि वन नेशन-वन राशन कार्ड योजना के अंतर्गत प्रतिमाह औसतन 39 हजार परिवार अन्य राज्यों में तथा लगभग 6 हजार परिवार अन्य राज्यों से मध्यप्रदेश में निःशुल्क राशन प्राप्त कर रहे हैं। इसके अलावा लगभग 16 लाख परिवार प्रतिमाह अंतर-जिला पोर्टेबिलिटी का लाभ ले रहे हैं।

वेयरहाउसिंग व्यवस्था को सुदृढ़ करने तीन मोबाइल ऐप विकसित

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि वेयरहाउसिंग व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन द्वारा नमी मापक, फ्यूमिगेशन एवं निरीक्षण से संबंधित तीन मोबाइल ऐप विकसित किए गए हैं, जिससे अनाज भंडारण की रियल टाइम मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जा रही है। किसान हित में विभाग द्वारा समर्थन मूल्य पर गेहूं एवं धान की खरीदी की गई। लगभग 28 लाख किसानों से फसल खरीदी कर 51 हजार करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। गेहूं की खरीदी में 175 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देकर 2600 रुपये प्रति क्विंटल की दर से भुगतान किया गया।

सत्यापन एवं निरीक्षण से 49 करोड़ से अधिक का राजस्व अर्जित

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा है कि नाप-तौल विभाग द्वारा विगत दो वर्षों में सत्यापन एवं निरीक्षण के माध्यम से 49 करोड़ 14 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया गया है। निरीक्षण के दौरान अनियमितता पाए जाने पर 11 हजार 700 प्रकरण पंजीबद्ध कर लगभग 4 करोड़ 50 लाख रुपये की दंड राशि वसूल की गई। उपभोक्ता विवादों के त्वरित निराकरण के लिए उपभोक्ता आयोगों का कंप्यूटरीकरण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप दो वर्षों में 3 लाख 7 हजार से अधिक प्रकरणों का निराकरण किया गया। विभाग द्वारा आगामी अवधि में राशन दुकानों को मुख्यमंत्री पोषण मार्ट के रूप में विकसित करने, सॉफ्टवेयर सिस्टम के एकीकरण, उन्नत तकनीक से राशन वितरण तथा सिंहस्थ 2028 के लिए मेला क्षेत्र में राशन एवं गैस आपूर्ति की विस्तृत व्यवस्था किए जाने की कार्य योजना भी तैयार की गई है।

जनजातीय वर्ग के अधिकार को सशक्त करने वाला है पेसा कानून : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पेसा कानून के स्थापना दिवस के अवसर पर, विशाखापट्टनम में आयोजित हो रहे राष्ट्रीय पेसा महोत्सव के आयोजन के लिए राज्य सरकार की ओर से जनजातीय भाई-बहनों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि यह आयोजन जनजातीय स्वशासन, सम्मान और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण और सार्थक कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की पावन भूमि पर आदिकाल से निवास करने वाले जनजातीय समुदाय हमारे राष्ट्र की सांस्कृतिक आत्मा हैं। उनके अधिकार, स्वाभिमान और स्वशासन को सशक्त करने वाला पेसा कानून सहभागी लोकतंत्र की मजबूत आधारशिला है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश ने पेसा अधिनियम को संवेदनशीलता और दृढ़ संकल्प के साथ लागू किया है। हमने ग्राम सभाओं के गठन से जनजातीय समाज को सशक्त बनाया है। मध्यप्रदेश का जनजातीय समाज अब, अपने जल-जंगल-जमीन, सामाजिक व्यवस्थाओं और विकास की प्राथमिकताओं पर स्वयं निर्णय लेकर स्वशासी समुदाय के रूप में आगे बढ़ रहा है। यह पेसा कानून की भावना और संविधान की आत्मा का सजीव उदाहरण है। मध्यप्रदेश सरकार जनजातीय भाइयों-बहनों के हितों, संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण के लिए सदैव कृत संकल्पित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विशाखापट्टनम में जारी पेसा महोत्सव के लिए उपरोक्त वीडियो संदेश में अपने विचार व्यक्त किए।

चार एसपीएस अधिकारियों को मिला आईपीएस कैडर अवॉर्ड

विक्रांत, सुरेंद्र, आशीष और राजेश बने आईपीएस, 21 नवंबर को हुई थी डीपीसी

भोपाल (नप्र)। राज्य पुलिस सेवा के चार अधिकारियों को आईपीएस कैडर अवॉर्ड मिला है। ये सभी अधिकारी 2024 की डीपीसी में पदोन्नत किए गए हैं और भारतीय पुलिस सेवा के लिए चयनित हुए हैं। इस आदेश में विक्रांत मुरब, सुरेंद्र कुमार जैन, आशीष खरे और राजेश रघुवंशी को आईपीएस अवॉर्ड दिया गया है।

गृह मंत्रालय द्वारा बुधवार को जारी आदेश में कहा गया है कि मध्यप्रदेश के राज्य पुलिस सेवा के

अधिकारी विक्रांत मुरब, सुरेंद्र कुमार जैन, आशीष खरे और राजेश रघुवंशी को आईपीएस अवॉर्ड किया जा रहा है। ये चारों अधिकारी एक साल के लिए परिवीक्षा अवधि में रहेंगे।

डीपीसी बैठक के एक माह बाद नोटिफिकेशन जारी- राज्य पुलिस सेवा के 1997 और 1998 बैच के इन अफसरों को आईपीएस पद पर प्रमोट करने के लिए 21 नवंबर को डीपीसी की बैठक हुई थी। विक्रांत मुरब राज्य पुलिस सेवा के 1997 बैच के अधिकारी हैं, जबकि सुरेंद्र कुमार जैन, आशीष खरे और राजेश रघुवंशी 1998 बैच के अधिकारी हैं। डीपीसी बैठक के एक माह बाद आज इसका नोटिफिकेशन जारी किया गया है।

इससे पहले भी 12 सितंबर को इन पदों के लिए डीपीसी की बैठक हुई थी, लेकिन नोटिफिकेशन जारी होने में देरी और प्रशासनिक कारणों से उसे रद्द कर दिया गया था। इसके बाद 21 नवंबर को समिति की फिर से बैठक बुलाकर अंतिम निर्णय लिया गया। वरिष्ठता सूची में सबसे ऊपर सीताराम ससत्या और अमृत मीणा का नाम था। अमृत मीणा के जाति प्रमाण पत्र को लेकर आपत्ति के बाद प्रमोशन अटका हुआ है, वहीं ससत्या विभागीय जांच के चलते प्रमोशन से वंचित हो गए हैं।

12 जनवरी को मध्यप्रदेश की स्टार्टअप यात्रा के 10 वर्ष होंगे पूरे

मध्यप्रदेश स्टार्टअप समिट और इकोसिस्टम अवार्ड्स 2026 दिए जाएंगे, मुख्यमंत्री होंगे मुख्य अतिथि

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश अपनी स्टार्टअप यात्रा के 10 वर्ष पूर्ण होने पर 12 जनवरी 2026 को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मौजूदगी में स्टार्टअप में नवाचार एवं उत्कृष्टता का उत्सव मनाएगा।

इस अवसर पर मध्यप्रदेश स्टार्टअप समिट होगी जिसमें इकोसिस्टम अवार्ड्स 2026 के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में भी अन्य पुरस्कार वितरित किए जाएंगे। एमएसएमई के आयुक्त श्री दिलीप कुमार ने युवा दिवस पर होने वाले इस आयोजन की तैयारियों की अधिकारियों के साथ बैठक में समीक्षा की।

मध्य प्रदेश स्टार्टअप सेंटर, मध्य प्रदेश लघु उद्योग निगम एवं एमएसएमई विभाग के अंतर्गत 12 जनवरी 2026 को भोपाल के रवीन्द्र भवन में मध्य प्रदेश स्टार्टअप समिट एवं इकोसिस्टम अवार्ड्स 2026 का आयोजन होगा। कार्यक्रम में उत्कृष्ट स्टार्टअप्स, इनक्यूबेटर्स एवं इकोसिस्टम एनेबलर्स विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित होंगे।

सर्वश्रेष्ठ महिला उद्यमी, सर्वश्रेष्ठ युवा उद्यमी, सर्वाधिक नवोन्मेषी स्टार्टअप, सर्वश्रेष्ठ प्रारंभिक-चरण स्टार्टअप, सर्वश्रेष्ठ विकास-चरण स्टार्टअप, प्राथमिक क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ स्टार्टअप तथा इकोसिस्टम श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ स्टार्टअप एनेबलर (इनक्यूबेटर/एक्सेलेरेटर), सर्वश्रेष्ठ एंजेल निवेशक/वेंचर कैपिटलिस्ट, सर्वश्रेष्ठ कॉर्पोरेट सहयोग जो एमपी स्टार्टअप नीति एवं कार्यान्वयन योजना 2025 के अनुरूप होंगी उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा।

संपादकीय

नाम जुड़वाने का मौका अभी भी

मप्र में एसआईआर के बाद जारी मतदाता सूची में करीब 8 फीसदी वोटर सूची से बाहर हो गए हैं। अन्य राज्यों की तुलना में यह आंकड़ा हालांकि बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन एसआईआर में गड़बड़ियों की शिकायतें भी आई हैं। चुनाव आयोग द्वारा 23 दिसंबर को जारी मतदाता सूची में मृत मतदाताओं के सर्वाधिक नाम जबलपुर जिले में पाए गए तो सर्वाधिक नाम जिन शहरों में कटे वो भोपाल और इंदौर हैं। इसी तरह मल्टीपल एंट्री में बुरहानपुर अव्वल रहा। आयोग के मुताबिक जबलपुर में 51 हजार 357 वोटर्स के नाम लिस्ट में थे, जिनकी मौत हो चुकी है। मल्टीपल एंट्री में बुरहानपुर ने बड़े शहरों को पीछे छोड़ दिया है। 23 हजार 594 वोटर्स के नाम एक से अधिक जगह पर दर्ज हैं। वोटर शिफ्टिंग के मामलों में भोपाल प्रदेश में अव्वल रहा। गौरतलब है कि यह एसआईआर का प्रारंभिक चरण था। इस चरण में राज्य में कमजोर या धीमे नेटवर्क वाले क्षेत्रों की पहचान की गई। ऐसे क्षेत्रों के बीएलओ को मजबूत नेटवर्क वाले स्थानों पर जमा होकर गणना प्रपत्रों के डिजिटाइजेशन की सुविधा प्रदान की गई, जिससे काम समय पर पूरा किया जा सके।

चुनाव आयोग के मुताबिक, ड्राफ्ट में प्रदेश के 42.74 लाख वोटर्स बाहर हो गए हैं। राज्य में जिन 42.74 लाख नाम वोटर लिस्ट से हटाए गए हैं, उनमे 19.19 लाख पुरुष और 23.64 लाख महिलाएं हैं। प्रदेश में 8 लाख 65 हजार 832 ऐसे मतदाता हैं, जिनसे आयोग संपर्क नहीं कर पाया। इनका डेटा 2003 की एसआईआर सूची से मिलान नहीं हुआ। प्रदेश के 8.65 लाख से अधिक मतदाताओं को नोटिस जारी होना शुरू हो गए हैं। उन्हें चुनाव आयोग के तय 11 दस्तावेजों को बीएलओ के समक्ष पेश करना होगा। इसके आधार पर उनका नाम मतदाता सूची में जुड़ सकेगा। नो मैपिंग के मामले में इंदौर जिला सबसे आगे है। वहां ऐसे 1 लाख 33 हजार 696 वोटर्स हैं। आयोग के अनुसार जो युवा मतदाता 1 जनवरी 2026 को 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहे हैं, वे ऑफलाइन या ऑनलाइन अपना नाम जुड़वा सकते हैं। भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट Voters.eci.gov.in पर जाकर ऑनलाइन फॉर्म- 6 भरना होगा। इसके साथ ही ऑफलाइन के लिए बीएलओ से संपर्क कर सकते हैं। एसआईआर ड्राफ्ट प्रकाशन के बाद 22 जनवरी 2026 तक दावा आपत्ति की प्रक्रिया चलेगी। इस अवधि में वास्तविक मतदाता अपना नाम जुड़वा सकते हैं या आपत्तियां दर्ज करा सकते हैं। एसआईआर में कुल 5 करोड़ 74 लाख 6 हजार 143 मतदाताओं में से 5 करोड़ 31 लाख 31 हजार 983 मतदाताओं के गणना पत्रक आयोग को मिले। इस एसआईआर में राज्य के 6 राजनीतिक दलों ने 1 लाख 35 हजार 882 बूथ लेवल एजेंट नियुक्त किए हैं। वैसे मतदाता सूची में मतदाता अपने नाम दो तरीकों से जांच सकते हैं। यदि आपका नाम पुरानी सूची में था, लेकिन अब नहीं है तो इसका मतलब है कि सत्यापन के दौरान किसी कारण (जैसे पते पर न मिलना, डुप्लीकेसी या तकनीकी गलती) से आपका नाम हटा दिया है। अपना नाम दोबारा जुड़वाने के लिए दावा कर सकते हैं। इसके लिए फॉर्म-6 भरना होगा। जो ऑन लाइन नहीं भर सकते, वो बीएलओ से संपर्क कर ऑफ लाइन भी भर सकते हैं। इसका अर्थ यही है कि वोटर लिस्ट में नाम जोड़ने की अभी भी संभावना है। बशर्ते कि आपके पास आवश्यक दस्तावेज होने चाहिए। मप्र में एसआईआर की यह प्रक्रिया मोटे तौर पर शांतिपूर्वक सम्पन्न हुई। लेकिन इसका दुखद पक्ष तीस से अधिक बीएलओ की आत्महत्या का रहा, जो काम के बोझ को सह नहीं पाए और अवसाद में आकर जान दे दी। चुनाव आयोग और सरकार को इनके परिवारों के बारे में सहानुभूति से विचार करना चाहिए।

विचार जो अटल थे, संकल्प जो मोदीजी ने साकार किए

अटल स्मृति वर्ष

हेमन्त खण्डेलवाल

लेखक मध्य प्रदेश भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हैं।

अटल जी का व्यक्तित्व विचार और संवेदना का दुर्लभ संगम था। वे दृढ़ राष्ट्रवादी थे, किंतु संवाद और सहमति के पक्षधर भी। सत्ता में रहते हुए भी उनकी भाषा में मर्यादा और व्यवहार में विनम्रता रही। कविता उनकी आत्मा थी और राष्ट्रसेवा उनका जीवन-संकल्प। यही कारण है कि वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि लोकतंत्र की गरिमा के प्रतीक के रूप में स्मरण किए जाते हैं। प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने सुशासन को व्यवहार में उतारा। पोखरण परमाणु परीक्षणों से भारत की सामरिक आत्मनिर्भरता स्थापित हुई, तो कारगिल जैसे कठिन समय में उन्होंने पूरे देश को एकजुट नेतृत्व दिया। स्वर्णिम चतुर्भुज, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और दूरसंचार क्षेत्र में किए गए सुधार-ये सभी उस विकसित भारत की आधारशिला बने, जिसकी दूरदृष्टि अटल जी ने वर्षों पहले देख ली थी।

25 दिसंबर केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की वैचारिक यात्रा का स्मरण दिवस है। यह वह दिन है, जब राष्ट्र अटल बिहारी वाजपेयी जी जैसे युगद्रष्टा नेता की जन्मजयंती मनाता है। उनका जन्मशताब्दी वर्ष हमें उनके विचारों, संकल्पों और सपनों को और गहराई से आत्मसात करने का अवसर देता है। भारतीय जनता पार्टी द्वारा अटल स्मृति वर्ष के रूप में इस कालखंड को मनाना, अतीत के गौरव को वर्तमान की जिम्मेदारी और भविष्य के संकल्प से जोड़ने का सशक्त प्रयास है।

अटल जी का व्यक्तित्व विचार और संवेदना का दुर्लभ संगम था। वे दृढ़ राष्ट्रवादी थे, किंतु संवाद और सहमति के पक्षधर भी। सत्ता में रहते हुए भी उनकी भाषा में मर्यादा और व्यवहार में विनम्रता रही। कविता उनकी आत्मा थी और राष्ट्रसेवा उनका जीवन-संकल्प। यही कारण है कि वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि लोकतंत्र की गरिमा के प्रतीक के रूप में स्मरण किए जाते हैं।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने सुशासन को व्यवहार में उतारा। पोखरण परमाणु परीक्षणों से भारत की सामरिक आत्मनिर्भरता स्थापित हुई, तो कारगिल जैसे कठिन समय में उन्होंने पूरे देश को एकजुट नेतृत्व दिया। स्वर्णिम चतुर्भुज, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और दूरसंचार क्षेत्र में किए गए सुधार-ये सभी उस विकसित भारत की आधारशिला बने, जिसकी दूरदृष्टि अटल जी ने वर्षों पहले देख ली थी।

अटल बिहारी वाजपेयी जी का मध्यप्रदेश से रिश्ता केवल राजनीतिक नहीं, ऐतिहासिक और भावनात्मक भी था। ग्वालियर को कर्मभूमि बनाकर उन्होंने इस प्रदेश से आत्मीय संबंध स्थापित किया। ग्वालियर की जनता ने उन्हें लोकसभा में भेजा, तब यह केवल एक चुनावी विजय नहीं थी, बल्कि कठिन समय में दिया गया वह विश्वास था जिसने अटल जी को राष्ट्रीय नेतृत्व की नई ऊर्जा प्रदान की।

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्मभूमि ग्वालियर को यह भी गौरव प्राप्त है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानवदर्शन' की वैचारिक धारा को यहीं प्रथम स्वर मिला। अटल जी की विचारशील राजनीति और एकात्म मानवदर्शन की यह संगति ग्वालियर को भारतीय लोकतंत्र की वैचारिक चेतना का विशेष केंद्र बनाती है।

अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर ग्वालियर की धरती का पुनः राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बनना कोई संयोग नहीं, बल्कि वैचारिक निरंतरता का प्रतीक है। 25 दिसंबर को माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का ग्वालियर आगमन और 'अभ्युदय एमपी ग्रोथ समिट-2025' जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उनकी सहभागिता, अटल जी की विकास-दृष्टि को वर्तमान भारत से जोड़ने वाला सशक्त संदेश है। जिस ग्वालियर ने अटल जी को राष्ट्र नेतृत्व की नई दिशा दी थी, वही ग्वालियर आज उनके विचारों के अनुरूप विकास,सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के नए अध्याय का साक्षी बन रहा है।

अटल जी का सपना था-एक ऐसा भारत जो मजबूत भी हो और संवेदनशील भी; जो विकास करे, पर मूल्यों से विमुख न हो; जो आत्मनिर्भर बने, पर विश्व के साथ संवाद बनाए रखे। आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 'विकसित भारत 2047' की दिशा में आगे बढ़ता राष्ट्र उसी अटल दृष्टि का आधुनिक और सशक्त विस्तार है। डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, मजबूत आधारभूत संरचना और वैश्विक मंच पर भारत की निर्णायक भूमिका ये सभी अटल जी के स्वप्न को साकार करते हुए दिखाई देते हैं।

अटल जी के विचारों की दृढ़ता को यदि किसी ने निकट से जिया है, तो वह हमारी पीढ़ी है। मुझे स्मरण है वर्ष 1980 का वह समय, जब मैं मात्र 16 वर्ष का था। उसी वर्ष मेरे पिताजी स्वर्गीय विजय खंडेलवाल जी बैतूल जिले के पहले निर्वाचित भाजपा जिला अध्यक्ष बने। जनता पार्टी से अलग होकर भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई थी। संख्या बल सीमित था,कार्यकर्ताओं पर दबाव था,सत्ता का आकर्षण त्याग कर हम एक कठिन वैचारिक यात्रा पर निकले थे।

उसी दौर की एक स्मृति आज भी मन में ताज़ा है। अटल बिहारी वाजपेयी जी हमारे घर आए थे,साधारण माहौल, खाने की मेज़ पर बातचीत, कभी हल्की मुस्कान, कभी आत्मीय ठहाका। अटल बिहारी वाजपेयी जी कभी बोझिल नहीं दिखते थे। चुनौतियाँ थीं,लेकिन उनके चेहरे पर निराशा नहीं होती थी। वे बड़े सहज भाव से कहते थे कि आज हम कम ज़रूर हैं, पर हमारा भरोसा मजबूत है,और यही भरोसा आगे चलकर ताक़त बनेगा। उनका विश्वास यही था कि यह रास्ता भले कठिन हो, पर सही है-क्योंकि यह सत्ता का नहीं, राष्ट्रसेवा का मार्ग है।

उनकी वही सहजता, आत्मबल और भविष्य पर अडिग भरोसा हम जैसे युवाओं के लिए उस समय सबसे बड़ा संबल बन गया। आज पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि अटल जी की वही अडिग दृष्टि आज यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पूर्ण सिद्धि को प्राप्त हुई है। भारतीय जनता पार्टी आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। यह केवल संगठनात्मक विस्तार नहीं, बल्कि विचार की विजय है। भाजपा आज सत्ता की राजनीति नहीं, बल्कि जनकल्याण, लोककल्याण और सेवा-आधारित सुशासन का पर्याय बन चुकी है। अटल जी का वह विश्वास, जो 1980 में चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में व्यक्त हुआ था, आज विकसित भारत के संकल्प के रूप में साकार खड़ा है-आत्मविश्वास से भरा, संकल्पबद्ध और राष्ट्रहित को समर्पित।

अटल स्मृति वर्ष हम सभी के लिए अवसर है अपने सार्वजनिक जीवन,सामाजिक आचरण,और राष्ट्रीय कर्तव्यों में उन मूल्यों को अपनाने का ,जिनका प्रतिनिधित्व अटल जी करते थे। उनके विचारो को स्मरण में नहीं आचरण में उतारना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हमारे अटलजी : राष्ट्र सेवा और सुशासन के युगपुरुष

जयंती पर विशेष

हितानंद शर्मा

लेखक भाजपा प्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं।

भारत ने करवट ले ली है। देश अब अतीत की कमियों को दूर कर स्वाभिमान और स्वावलंबन के साथ 'विकसित भारत' के संकल्प को पूर्ण करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्पर के साथ पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की विरासत को और आगे ले जा रहे हैं। अटलजी के स्वप्नों का लोक-कल्याणकारी, शक्ति संपन्न, अडिग, अजेय, समर्थ और विश्व का मार्गदर्शन करने वाले राष्ट्र का उत्थान होते दुनिया देख रही है।

भारतीय लोकतंत्र के लिए 25 दिसंबर एक जननायक की जन्मतिथि मात्र नहीं है। यह उस विचार, संस्कार और राजनीतिक परंपरा का स्मरण दिवस है, जिसने सत्ता को सेवा, राजनीति को मर्यादा और राष्ट्रनीति को नैतिक बल प्रदान किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक से लेकर जनसंघ और फिर भाजपा की उनकी राजनैतिक यात्रा सर्वसमावेशी व्यक्तित्व की प्रतीक रही है। यही कारण है कि विश्व ने उन्हें अजातशत्रु के रूप में जाना। अटल जी का जन्मदिवस आज अटल स्मृति वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। यह इस बात का संकेत है कि भारत केवल व्यक्तियों को नहीं बल्कि उनके विचारों और मूल्यों का भी स्मरण करता है।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के उन दुर्लभ नेताओं में थे जिनका व्यक्तित्व सत्ता से बड़ा और समय से आगे दिखाई देता था। वे ऐसे राजनेता थे जो विचारधारा में अडिग रहते हुए भी संवाद में उदार थे। अटल जी के लिए राजनीति लोकतांत्रिक विमर्श की साधना की भांति रही। संसद में भले ही विषय कितना ही संवेदनशील क्यों न हो अटलजी का वक्तव्य कभी कटु नहीं होता था। वे शब्दों से आघात नहीं करते थे, बल्कि तर्क, तथ्य और भाव से अपनी बात रखते थे। संसदीय परंपरा में अटल बिहारी वाजपेयी का आचरण एक आदर्श की तरह दिखाई देता है। उनकी यह विशेषता भारतीय लोकतंत्र को एक नैतिक ऊँचाई प्रदान करती है जिसमें असहमति शालीनता से व्यक्त की जा सकती है और विरोध भी गरिमामय तरीके से किया जा सकता है।

25 दिसम्बहर 1924 को ग्वीलियर में जन्में अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक फिर जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से राष्ट्र सेवा करते हुए एक प्रकाशवान नक्षत्र की तरह भारतीय लोकतंत्र में प्रेरणा की तरह स्थापित हो गए। अटल जी को भाजपा का प्रथम अध्यक्ष होने का गौरव भी प्राप्त है। मुंबई अधिवेशन में दिया गया उनका वह भाषण प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए मानो संकल्प और संबल बन गया जिसमें उन्होंने कहा था - अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा। और उनकी वाणी सत्य हुई, आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सूर्य अपनी छंटा बिखेर रहा है, कमल खिल रहा है और अंधेरा छंट चुका है।

अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वैचारिक परंपरा से आए थे। उन्होंने राजनीति में रहते हुए विचारधारा को समावेशी राष्ट्रीयता का स्वरूप दिया। वे जानते थे कि राष्ट्र निर्माण के लिए संवाद, विश्वास और सहभागिता आवश्यक तत्व हैं। उनकी राजनीति में राष्ट्र सर्वोपरि था और राष्ट्र का अर्थ केवल सीमाएँ नहीं बल्कि जनता, संस्कृति और मानवीय संवेदना भी थी। यही कारण है कि वे दृढ़ निर्णय लेने वाले नेता थे और करुणा से भरे कवि भी थे।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का कार्यकाल आज के भारत के विकास की नींव का कालखंड माना जाता है। स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना ने देश को भौगोलिक रूप से जोड़ा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने गाँवों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा, किसान फसल बीमा योजना ने किसानों को संबल प्रदान किया, दूरसंचार क्रांति ने भारत को डिजिटल भविष्य की ओर अग्रसर किया। अटलजी जब 1996 में देश की पहली गैर कांग्रेसी सरकार के प्रधानमंत्री बने तो भारत की जनता ने महसूस किया कि लोकतंत्र की अवधारणा के अनुसार जनता के द्वारा, जनता के लिए, जनता की सरकार सही अर्थों में क्या होती है। जनता से जाना कि दीनदयाल जी और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की वैचारिक विरासत का सुशासन सही अर्थों में क्या होता है।

अटलजी गठबंधन की सरकार के प्रधानमंत्री थे। इससे पूर्व राजनीतिक दलों के गठबंधन इसलिए सफल नहीं हो पाते थे क्यों कि आशंकाएं, अविश्वास, महत्वाकांक्षाएं और संवाद की कमी उन्हें मजबूत नहीं होने देती थी। परिणामस्वरूप गठबंधन की सरकारें अस्थिर रहती थीं। यह अटलजी की ऐतिहासिक सफलता थी कि उन्होंने गठबंधन की राजनीति को स्थायित्व दिया और यह भी सिद्ध किया कि सहयोग से चलने वाली सरकारें भी निर्णायक और प्रभावी हो सकती हैं। यह भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

एक समर्थ, सक्षम और शक्तिशाली भारत उनके स्वप्नों में रहता था। वे जानते थे कि राष्ट्रहित में कठोर निर्णय भी आवश्यक हैं और मानवीय पहल भी जरूरी हैं। राष्ट्र प्रथम की नीति पर चलते हुए पोखरण परमाणु परीक्षण-2 का निर्णय लेकर अटलजी ने भारत की सामरिक क्षमता को वैश्विक मंच पर दमदार तरीके से स्थापित किया। यह निर्णय साहस, आत्मविश्वास और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक था। अटलजी ने लाहौर बस यात्रा कर यह संदेश भी दिया कि भारत की नीति में शक्ति का उद्देश्य युद्ध नहीं बल्कि शांति है। वहीं करगिल घाटी से दुश्मन की सेनाओं को खदेड़ने की उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति के लिए उन्हें युगों-युगों तक याद किया जाएगा।

केवल राजनीतिक निर्णयों के माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी के पूरे व्यक्तित्व को नहीं समझा जा सकता। वे एक संवेदनशील कवि थे, जिनकी कविताओं में राष्ट्र गुनगुनाता था। उनकी रचनाओं में आशा, विश्वास, दृढ़ता के साथ राष्ट्र के पुनर्निर्माण का संकल्प भी है। वे शब्दों के माध्यम से समाज का जागरण करते थे तो भारत के स्वर्णिम भविष्य के प्रति आश्वस्त भी करते थे। आज भी उनकी कविताएँ भारतीय चेतना को जागृत करती हैं और यह याद दिलाती हैं कि राष्ट्र केवल वर्तमान नहीं बल्कि इतिहास की स्मृति और भविष्य के संकल्पों दोनों का सम्मिलित स्वरूप है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज जिस दृढ़ संकल्प के साथ देश को एक सक्षम और निर्णायक नेतृत्व प्रदान करते हुए सच्चे अर्थों में अटल जी के 21वीं सदी भारत की सदी बाने के स्वप्न को साकार कर रहे हैं। निर्णायक और पारदर्शी शासन, भ्रष्टाचार मुक्त अर्थव्यवस्था और तकनीकी आधारित पारदर्शी लोक कल्याकणकारी योजनाएं अटल जी की विरासत को संभालने और उसे आगे ले जाने के महत्व पूर्ण प्रयास हैं। आज भारत का जो चित्र सामरिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से विश्वी पटल पर उभर रहा है।

अटल स्मृति वर्ष और 25 दिसंबर हमें यह विचार करने का अवसर देते हैं कि हम अटल जी के बताए मार्ग पर कितनी दृढ़ता से चलते हुए उनसे प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। उनका जीवन यह सिखाता है कि लोकतांत्रिक परंपराओं, राष्ट्रीयता, व्यक्तिगत जीवन में शुचिता, सकारात्माकता और धैर्य के साथ राष्ट्र व समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन किस प्रकार करना है। अटल जी किसी एक दल या कालखंड के नहीं, बल्कि समूचे भारतीय लोकतंत्र की धरोहर हैं। उनका स्मरण केवल अतीत की ओर देखने का नहीं, बल्कि भविष्य के लिए मार्गदर्शन लेने का अवसर है। 25 दिसंबर और अटल स्मृति वर्ष हमें यह संकल्प दिलाते हैं कि राजनीति राष्ट्रसेवा और लोककल्याण का साधन है।

वैचारिक निष्ठा और मूल्यों की पवित्रता के प्रति प्रतिबद्ध

अटल जी की जयंती

डॉ. अशोक कुमार भार्गव

(पूर्व आईएएस एवं मोटिवेशनल स्पीकर)

भारतीय राजनीति के सर्व स्वीकार्य महानायक भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी का समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व प्रभु श्री राम की मर्यादा, संकल्प शक्ति, कर्म योगी कृष्ण के राजनीतिक कौशल, चातुर्य और आचार्य चाणक्य की दूरदर्शी निश्चयात्मक बुद्धि के आलोक से समन्वित है जिसकी बुनियाद इंसानियत के थर्मामीटर की सर्वोच्च डिग्री तक उनके अंतस में सबके लिए संवेदना, उदात्तता, सहृदयता और राष्ट्रवाद की भाव भूमि पर आधारित है। तेजस्विता के प्रखर सूर्य अटल जी ने सुशासन की आभा से न केवल राष्ट्र का गौरव बढ़ाया वरन विषम से विषम परिस्थितियों में भी आर्थिक विकास और राष्ट्रीय कल्याण की बहुआयामी दीर्घकालीन योजनाएं प्रारंभ की।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का संपूर्ण कार्यकाल सुशासन के आधार पर अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उन्नयन के लिए समर्पित था। उनकी दृष्टि में व्यक्ति के सशक्तिकरण का अर्थ है राष्ट्र का सशक्तिकरण और सशक्तिकरण तीव्र सामाजिक बदलाव के साथ तीव्र आर्थिक वृद्धि से किया जा सकता है। भारतीय राजनीति में नए युग का शुभारंभ करने वाले अटल जी के जन्म दिवस को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1914 में सुशासन की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए सुशासन दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा करते हुए कहा कि सुशासन किसी भी राष्ट्र की प्रगति की कुंजी है। अटल जी राजनीति में वैचारिक निष्ठा और मूल्यों की पवित्रता के प्रति प्रतिबद्ध थे। इसलिए उन्होंने सुशासन की बुनियाद रखी ताकि जवाबदेही, उत्तरदायी पारदर्शी, न्याय संगत, कुशल एवं समावेशी शासन की व्यवस्था को साकार किया जा सके। यह व्यवस्था विकासोन्मुखी हो, समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के प्रति समर्पित हो ताकि राष्ट्र की उन्नति में आम आदमी को भी विकास की मुख्यधारा में भागीदारी की अनुभूति का सुखद एहसास हो सके। प्रारंभ से ही हमारी संस्कृति के धवल तत्वों में सुशासन की परिकल्पना का विराट स्वरूप परिलक्षित होता रहा है जो समस्त विश्व को परिवार मानते हुए सबके सुखी, प्रसन्न, स्वस्थ, निरोगी और सबके मंगल की कामना करती है।यहां तक की सभी प्राणियों, पेड़ पौधों, जीव जंतुओं पशु पक्षियों आदि के साथ ही अखिल विश्व के कल्याण की अभिलाषी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में आचार्य कौटिल्य ने प्रजा के हित को ही राजा का चरम लक्ष्य निरूपित किया है। प्रजा के सुख में ही राजा का सुख और प्रजा के हित में ही उसका हित समाहित है। अपना हित करने से राजा का हित नहीं होता बल्कि जो प्रजा के लिए हितकर हो उसे करने में ही राजा का हित होता है। अतः प्रजा के लिए राजा की उपलब्धता प्रजा की शिकायतों, समस्याओं के समाधान हेतु बिना किसी बाधा के सहज और सरल होनी चाहिए। मेरे सपनों के भारत में महात्मा गांधी जी जिस राम राज्य की परिकल्पना करते हैं वह सुशासन के बिना अर्थहीन हो जाती है। इसीलिए लोकमान्य तिलक स्वराज्य के साथ सुराज की वकालत करते हैं। वहीं दूसरी ओर सामाजिक क्रांति के अग्रदूत डॉ. अंबेडकर की मान्यता है कि सुशासन की अवधारणा मानवीय गरिमा के सम्मान तथा सामाजिक आर्थिक न्याय की सुरक्षा की सुनिश्चितता के बिना साकार नहीं हो सकती।

राज धर्म को सर्वोच्च प्राथमिकता देने एवं उसका पालन करने वाले अटल जी में कभी भी अपने पराये में भेद किए बिना सच कहने का अद्भुत साहस था। वे असहमतियों का सदैव सम्मान करते थे इसीलिए विरोधियों के बीच भी सहज स्वीकार्य थे। अटल जी में सबको साथ लेकर चलने का राजनीतिक कौशल था। उनका विश्वास था कि राजा या शासक के लिए प्रजा प्रजा में भेद नहीं हो सकता। न जन्म के आधार पर, न जाति के आधार पर और न ही संप्रदाय के आधार पर। उनके कार्यकाल में कश्मीर से लेकर पाकिस्तान तक परस्पर संवाद का सिलसिला प्रारंभ हुआ। अलगाववादियों से बातचीत के फैसले पर प्रश्न उठा कि क्या बातचीत संविधान के दायरे में होगी तो उनका जवाब था इंसानियत के दायरे में होगी। अटल जी का विश्वास था कि भारतीय सनातन संस्कृति के आलोक में सुशासन के द्वारा लोक कल्याण को साकार किया जा सकता है। उनका विश्वास था कि यदि दूर दराज के क्षेत्रों में रहने वाले कमजोर, पिछड़े और वंचित वर्ग के लोगों को ज्ञान की रोशनी नहीं मिलती तो देश का विकास अधूरा रह जाएगा।21वीं सदी ज्ञान की सदी है, इसलिए हमें विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा प्रबंधन और मानविकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट शिक्षा केंद्रों की स्थापना कर युवा पीढ़ी को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। अतः युवाओं को बौद्धिक ज्ञान के साथ तार्किकता ,राष्ट्रभक्ति, चरित्र निर्माण और मूल्यों की शिक्षा प्रदान करनी होगी। 'सब पढ़ें सब बढ़ें' के चमत्कारी उद्घोष वाक्य के साथ सर्व शिक्षा अभियान उनकी सबसे अनोखी पहल थी जिसका उद्देश्य 6 से 14 साल के बच्चों को मुफ्त प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना था। अटल जी जानते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और गांव ही हमारी सभ्यता संस्कृति के सुनहरे अध्याय हैं।इसलिए एक मजबूत और विकसित भारत के निर्माण हेतु भारत की आत्मा को स्पर्श करती हुई प्रत्येक ग्रामपंचायत को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री सड़क योजना प्रारंभ की जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्तिकरण हुआ। अटल जी के कुशलनेतृत्व में राष्ट्रीय स्वर्ण चतुर्भुज मार्ग निर्माण परियोजना समय सीमामें पूर्ण हुई जिससे 8000 करोड रुपए की बचत प्राप्त हुई। अटल जी भविष्य दृष्टा भी थे इसीलिए उन्होंने आम आदमी के कल्याण के लिए 'अंत्योदय अन्न योजना' प्रारंभ की ताकि गरीबों को सस्ता खाद्यान्न उपलब्ध हो सके। हमारे अन्नदाता कृषकों के लिए क्रेडट कार्ड और फसल बीमा योजना लागू कर हमारी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में प्राण फूंकने का अद्भुत कार्य किया। देश को सूखा और बाढ़ से मुक्ति दिलाने के लिए राष्ट्र की प्रमुख नदियों को जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की। वरिष्ठ नागरिकों के लिए दादा-दादी बांड योजना,विद्यार्थियों को अध्ययन हेतुसस्ती दरों पर कर्ज के प्रावधान, अमानवीय शोषण के शिकार 37 करोड़असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, दुर्घटना एवं स्वास्थ्य बीमा योजना प्रारंभ कर सुशासन के अखिल भारतीय स्वरूप को जनोन्मुखी और सर्वसमावेशी बनायाताकि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक बिना किसी भेदभाव के पहुंच सके।

उन्होंने सदैव सामाजिक विषमताओं, विसंगतियों,विद्रूपताओं, अन्याय, अत्याचार और शोषण का प्रबलता से विरोध किया है। वे अपने नाम के अनुरूप अपनी मान्यताओं पर सदैव अटल रहे और बिहारी की तरह दृढ़ता के साथ प्रगतिशील भी। अटल जी ने संस्थागत भ्रष्टाचार के विरुद्ध विधि के राज्यकी प्रतिष्ठा की तथा खास और आम के बीच का अंतर समाप्त किया। उन्होंनेमर्यादा का उल्लंघन कभी नहीं किया। सत्ता का साकेत पाकर भी बहुत प्रसन्न नहीं हुए और ना ही वनवास प्राप्त होने पर विषादग्रस्त। वे कहते थे कि मैं मृत्यु से नहीं डरता केवल अपयश या बदनामी से डरता हूं। 'जय विज्ञान' का उद्घोष अटल जी के विराट चिंतन और दूरदृष्टि का प्रतीक है जिसे उन्होंने शास्त्री जी के ,'जय जवान, जय किसान' मंत्र के साथ संयुक्त किया। यह उनकी विज्ञान आधारित समग्र सोच की आवश्यकताओं का दर्शन है। यह संयोग नहीं है कि 'नित्य नूतन, चिर पुरातन' की धारा काविस्तार करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने उसमें एक कदम आगे बढ़कर 'जय अनुसंधान' जोड़ते हुए इस मंत्र की गरिमा का सम्मान और बढ़ाया है। अटल जी ने सामाजिक न्याय मंत्रालय, जनजाति मामलों से संबंधित मंत्रालय और पूर्वोत्तर भारत के विकास हेतु डोनर मंत्रालयों की स्थापना तथा तीन नए राज्यों का निर्माण कर सुशासन और विकास की न्याय संकल्पना को साकार किया है। अटल जी के नेतृत्व में भारत में आर्थिक सुधारों की एक नई श्रृंखला प्रारंभ हुई। उनके कार्यकाल में आर्थिक मंदी के बावजूद भारत में सकल घरेलू उत्पाद की तरह 8 प्रतिशत रही। विदेशी मुद्रा का भंडार 1998 में मात्र12 अरब डालर से बढ़कर 102 अरब डालर हो गया। उन्होंने वित्तीय घाटे को कम करने के उद्देश्य से राजकोषीय उत्तरदायित्व अधिनियम लागू किया। व्यवसाय एवं उद्योगों के संचालन में शासकीय हस्तक्षेप सीमित करने के लिए एक पृथक विनिवेश मंत्रालय गठित किया। उनके कार्यकाल में महंगाई दर मात्र 4 प्रतिशत तक ही सीमित रही।उन्होंने आधुनिक दूर संचार प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव करते हुए 1999 में नई दूरसंचार नीति का श्री गणेश किया जिसमें राजस्व हिस्सेदारी व्यवस्था के साथ दूरसंचार कंपनियों के लिए नियत लाइसेंस फीस परिवर्तित करने की नीतिगत पहल थी जिससे उद्योगों को चुनौतियों का सामनाकरने का आत्मविश्वास प्राप्त हुआ।

अटल जी के मानस में सदैव राष्ट्र प्रेम की प्रबल धारा प्रवाहित रहती थी। कारगिल युद्ध के दौरान ऑपरेशन विजय के माध्यम से पाकिस्तानी सेना के घमंड को चूर-चूर कर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की वहीं दूसरी ओर विपरीत परिणामों और विकसित राष्ट्रों के आर्थिक बहिष्कार की धमकी की चिंता किएबिना ही परमाणु परीक्षण कर वैश्विक स्तर पर स्वाभिमानी भारत के स्वर्णिमभविष्य की आधारशिला रखी। अटल जी सच्ची राष्ट्रभक्ति के प्रतीक थे। उनका हृदय खंडित भारत का मानचित्र देखकर व्यथित होता था। वे कहते थे 'आजादी अभी अधूरी है, रावी की शपथ न पूरी है।' हमारी एकता अनेकता में ऐसे परिलक्षित होनी चाहिए जैसे दूध में पानी। हमें आपस में मिलकर ही रहना चाहिए इसी में राष्ट्र का कल्याण है। 'सर पर बरसे यदि ज्वालाएं, निज हाथों से हंसते-हंसते, आग लगाकर चलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा।'

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्रिसमस पर विशेष

– अतुल गोयल

लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं।

रोशनी, प्रेम और सद्भाव का पर्व है क्रिसमस

दिसम्बर के महीने की हाड़ कंपा देने वाली कड़ाके की ठंड में इसराइल के येरूसलम से 8 किलोमीटर दूर बेथलेहम नामक एक छोटे से गांव में आधी रात के वक्त खुले आसमान तले एक अस्तबल में एक गरीब यहूदी यूसुफ की पत्नी मरियम की कोख से जन्मे थे यीशु, जिनके जन्म की सूचना सबसे पहले हेरोद जैसे क्रूर सम्राट को नहीं बल्कि गरीब चरवाहों को मिली थी। माना जाता है कि ये चरवाहे उसी क्षेत्र में अपनी भेड़ों के झुंड के साथ रहा करते थे और जिस रात ईसा ने धरती पर जन्म लिया, उस समय ये लोग खेतों में भेड़ों के झुंड की रखवाली करते हुए आग ताप रहे थे। कहा जाता है कि मरियम जब गर्भवती थी तो एक रात गैबरियल नामक एक देवदूत मरियम के सामने प्रकट हुआ, जिसने मरियम को बताया कि उन्हें ईश्वर के बेटे की मां बनने के लिए चुना गया है।

'क्रिसमस' पर्व पूरी दुनिया में 25 दिसम्बर को मनाया जाने वाला ईसाई समुदाय का सबसे बड़ा त्यौहार है। यह पर्व वास्तव में केवल एक धार्मिक पर्व ही नहीं है बल्कि इसका एक सांस्कृतिक नजरिया भी है। यह पर्व केवल एक दिन का उत्सव नहीं है बल्कि यह पूरे 12 दिन का पर्व है, जो क्रिसमस की पूर्व संध्या से शुरू हो जाता है। हिन्दुओं में जो महत्व दिवाली का है, मुस्लिमों में जितना महत्व ईद का है, वही महत्व ईसाईयों में क्रिसमस का है। जिस प्रकार हिन्दुओं में दिवाली पर अपने घरों को सजाने की परम्परा है, उसी प्रकार ईसाई समुदाय के लोग क्रिसमस के अवसर पर अपने घरों को सजाते हैं। इस अवसर पर शंकु आकार के विशेष प्रकार के वृक्ष 'क्रिसमस ट्री' को सजाने की तो विशेष महत्ता होती है, जिसे रंग-बिरंगी रोशनियों से सजाया जाता है। मान्यता है कि करीब दो हजार वर्ष पूर्व 25 दिसम्बर को ईसा मसीह ने समस्त मानव जाति का कल्याण करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया था। तब पूरे रोम में धार्मिक आडम्बर चारों ओर फैले थे, रोम शासक यहूदियों पर अत्याचार करते थे, धनाढ्य वर्ग विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करता था जबकि गरीबों की हालत अत्यंत दयनीय थी। चारों ओर अशांति फैली थी, भाई-भाई का शत्रु बन गया था, धर्मस्थलों के पादरी अथवा पुजारी स्वार्थसिद्धि में लिप्त थे, छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, ऊंच-नीच के बीच भेदभाव की गहरी खाई बन चुकी थी। ऐसे विकट समय में पृथ्वी पर जन्म लिया था यीशु ने। ईसाई धर्म के लोग मानते हैं कि ईसा के जन्म के साथ ही समूचे विश्व में एक नए युग का शुभारंभ हुआ था, यही कारण है कि हजारों वर्ष बाद भी उनके प्रति लोगों का वही उत्साह, वही श्रद्धा बरकरार है और 25 दिसम्बर की मध्य रात्रि को गिरिजाघरों के घड़ियाल बजते ही 'हैप्पी क्रिसमस' के उद्घोष के साथ जनसैलाब उमड़ पड़ता है, लोग एक-दूसरे को गले मिलकर बधाई देते हैं और आतिशबाजी भी करते हैं। इस अवसर पर लोग गिरिजाघरों के अलावा अपने घरों में भी खुशी और उल्लास से ऐसे गीत गाते हैं, जिनमें ईसा मसीह द्वारा दिए गए शांति, प्रेम एवं भाईचारे के संदेश की महत्ता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

जिन ईसा मसीह की स्मृति में लोग क्रिसमस का त्यौहार मनाते हैं, उनका जन्म अत्यंत विकट परिस्थितियों में हुआ था। दिसम्बर के महीने की हाड़ कंपा देने वाली कड़ाके की ठंड में इसराइल के येरूसलम से 8 किलोमीटर दूर बेथलेहम नामक एक छोटे से गांव में आधी रात के वक्त खुले आसमान तले एक अस्तबल में एक गरीब यहूदी यूसुफ की पत्नी मरियम की कोख से जन्मे थे यीशु, जिनके जन्म की सूचना सबसे पहले हेरोद जैसे क्रूर सम्राट को नहीं बल्कि गरीब चरवाहों को मिली थी। माना जाता है कि ये चरवाहे उसी क्षेत्र में अपनी भेड़ों के झुंड के साथ रहा करते थे और जिस रात ईसा ने धरती पर जन्म लिया, उस समय ये लोग खेतों में भेड़ों के झुंड की रखवाली करते हुए आग ताप रहे थे। कहा जाता है कि मरियम जब गर्भवती थी तो एक रात गैबरियल नामक एक देवदूत मरियम के सामने प्रकट हुआ, जिसने मरियम को बताया कि उन्हें ईश्वर के बेटे की मां बनने के लिए चुना गया है। उन दिनों जनगणना का कार्य चल रहा था और तब यह प्रथा थी कि जनगणना के समय पूरा परिवार अपने पूर्वजों के नगर में एकत्रित होता था और वहीं परिवार के सभी सदस्यों का नाम रजिस्टर में दर्ज कराता था।

यूसुफ दाऊद के कुटुम्ब तथा देश का था, इसलिए गर्भवती मरियम को साथ लेकर वह भी नाम लिखवाने अपने पूर्वजों की भूमि बेथलेहम पहुंचा। जनगणना की वजह से बेथलेहम में उस समय बहुत भीड़ थी। वहां पहुंचकर युसूफ ने एक सराय के मालिक से रूकने के लिए जगह मांगी लेकिन सराय में बहुत भीड़ होने के कारण उन्हें जगह नहीं मिली। मरियम को गर्भवती देख सराय के मालिक को उस पर दया आई और उसने उन्हें घोड़ों के अस्तबल में ठहरा दिया। वहीं आधी रात के समय मरियम ने एक अति तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया, जिसका 7 दिन बाद नामकरण संस्कार हुआ। बालक का नाम रखा गया 'जीजस', जिसे यीशु के नाम से भी जाना गया। यहूदियों के इस देश में उस समय रोमन सम्राट हेरोद का शासन था, जो बहुत पापी और अत्याचारी था। हेरोद को जीजस के जन्म की सूचना मिली तो वह बहुत घबराया क्योंकि भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी कि यहूदियों का राजा इसी वर्ष पैदा होगा और उसके बाद हेरोद राजा नहीं रह सकेगा। हेरोद ने जीजस की खोज में अपने सैनिकों की टुकड़ियां भेजी लेकिन वे जीजस के बारे में कुछ पता नहीं लगा सके।

घोर गरीबी के कारण जीजस की पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था तो नहीं हो पाई पर उन्हें बाल्यकाल से ही ज्ञान प्राप्त था। गरीबों, दुखियों व रोगियों की सेवा करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। इतना ही नहीं, बड़े-बड़े धार्मिक नेता भी उनके सवाल-जवाबों से अक्सर चकित हो जाते थे। उन दिनों लोग मूर्तिपूजा किया करते थे और सर्वत्र धर्म के नाम पर आडम्बर फैला था। यीशु ने मूर्तिपूजा के स्थान पर एक निराकार ईश्वर की पूजा का मार्ग लोगों को बताया और उन्हें अपने हृदय में आविर्भूत ईश्वरीय ज्ञान का संदेश सुनाया। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उनके शिष्यों की संख्या दिनोंदिन बढ़ने लगी तथा उनकी दयालुता और परोपकारिता की प्रशंसा सर्वत्र फैल गई, जिससे यहूदियों के पुजारी और धर्म गुरू उनके घोर शत्रु बन गए।

एक बार यीशु प्रार्थना कर रहे थे तो उन्हें अपना शत्रु मान चुके यहूदियोंके पुजारी व धर्मगुरू उनको पकड़कर ले गए। जब उन्हें न्यायालय में उपस्थित किया गया तो न्यायाधीश ने राजा और धर्मगुरूओं के दबाव में यीशु को प्राणदंड की सजा सुना दी। यहूदियों ने यीशु को कांटों का ताज पहनाया और फटे कपड़े पहनाकर कोड़े मारते हुए उन्हें पूरे नगर में घुमाया। फिर उनके हाथ-पांवों में कीलें ठोंककर उन्हें 'क्रॉस' पर लटका दिया गया लेकिन यहयीशु की महानत ही थी कि इतनी भीषण यातनाएं झेलने के बाद भी उन्होंने ईश्वर से उन लोगों के लिए क्षमायाचना ही की। सूली पर लटके हुए भी उनके मुंह से यही शब्द निकले, ''हेईश्वर! इन लोगों को माफ करना क्योंकि इन्हें नहीं पता कि ये क्या कर रहे हैं? ये अज्ञानवश ही ऐसा कर रहे हैं।'' उसके बाद से ही ईसाई समुदाय द्वारा 25 दिसम्बर अर्थात् ईसा मसीह के जन्मदिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाने लगा।

विनोद कुमार शुक्ल गये नहीं, हमारे बीच हैं

स्मृति लेख

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक पत्रकार हैं।

ज्ञानपीठ से समादृत कवि-उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल नहीं रहे। नहीं रहे यानि उनकी भौतिक देह अब हमारे बीच नहीं है। अपनी 90वीं सालगिरह से एक हफ्ता पहले उन्होंने सदा के लिये अपनी आंखें मूंद लीं। पिछले कुछ समय से वह गहन दैहिक पीड़ा में थे; अस्पताल और घर के दरम्यां झूलते हुये। सांसों की डोर अब टूटी तब टूटी की विषम स्थिति थी। उनके पाठकों और शुभचिंतकों का एक बड़ा संसार उनके लिये चिंतित था। उनकी महत्ता और प्रतिष्ठा कि उनकी कुशल क्षेम के लिये अलग-अलग समय पर पीएम, स्पीकर और सीएम ने उनकी मिजाजपुर्सी कर उनकी दीर्घायु की कामना की थी।

विनोद कुमार शुक्ल से मेरी पहली मुलाकात दिसंबर सन 78 में रायपुर में हुई थी। उसके बाद भेंटों का क्रम बना रहा। तब तक उनकी कविता की किताब लगभग 'जयहिन्द' आ चुकी थी और उपन्यास 'नौकर की कमीज' आने को था। उन्होंने मुझसे 'नौकर की कमीज' का प्रूफ जांचने को कहा और हम रिश्तों की अलग डोर में बंध गये। फिर आया खिलेगा तो देखेंगे और 'दीवार में एक खिड़की रहती थी।' इन कृतियों ने उनकी एक अलग छवि सिरजी; एक ऐसी छवि जो अन्य रचनाकारों, खासतौर पर प्रतिष्ठित बड़ों की छवि से भिन्न थी। वह शांत चित्त, संयत और शालीन थे; व्यक्ति और रचनाकार दोनों स्तरों पर। वह कंधे पर कुछ भी नहीं ढोते थे; न दंभ, न आडंबर और न फालतूपन। बड़बोलेपन से वह कोसों दूर थे। ऊंचे-पूरे कद के विनोद जी चलते तो मानो पांवों में रबड़ की स्लीपर पहने हों। कोई कर्कशता नहीं। अपने आप में दुबकी हुई उनकी आकर्षक शख्सियत हंसी उनकी मूंछों में दुबकी रहती और अल्फाज होंठों में। उनकी कविता बटियो के बीच दूब घास में दुबकी हरियाली की मानिंद चुनींदा शब्दों में। वह किसी अन्य कवि या उपन्यासकार की मानिंद न थे। उन्हीं की तर्ज पर कहें तो विनोद कुमार शुक्ल विनोद कुमार शुक्ल की तरह थे। उनके साथ रहो तो किसी और का ख्याल ही नहीं आता। वह पाठक या श्रोता को अपने साथ लेकर अलग छाँव

भरी पगडंडी पर निकल जाते थे। उनके साथ चलना औरों को भूलने से अधिक उनका हो जाना था। और वह भी साथ चल रहे साथी से अधिक उसके साथ होने को जानते थे। वक्त के साथ उनकी दुनिया उनके घर के करीब होती गयी थी। वह घर में बरामदे में झूले पर बैठ जाते और सड़क पर आते-जाते लोगों को देखते। सड़क उनके तईं दुनिया को देखने का रंगमंच थी। विनोद जी का बचपन राजनांदगांव में मुश्किलों में बीता था। उन्हें रायपुर में स्थायी ठौर मिला। लेखन से उन्होंने प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा भी। उन्होंने अपने अनुभव को छत्तीसगढ़ का अनुभव कहा और रचनाओं में उसे विस्तार दिया। उनका परिवार गांधी जी से गहरे प्रभावित था। 30 जनवरी की नृशंस शाम को वह कभी नहीं भूले। उन्होंने गत दिनों कहा था 'मेरी आस्था जो है, वह मनुष्ता की तरह है। हिंसा, कट्टरता जैसी चीजें जब किसी धार्मिक आस्था से जुड़ती है; तो वह मुझको अच्छा नहीं लगता।' वह स्थूलता के बजाय सूक्ष्मता, ऊंचाई के बजाय गहराई और माननीय संवेदनों के ऊँचे मयार के रचनाकार थेः अलंकृत होकर भी निरलंकृत। चालीस साल पहले को याद करूं तो वह जब तब मेरी कविताएं सुनने दड़बेनुमा दफ्तर में चले आते थे। विज्ञान कविताओं का मेरा संकलन 'सलाम, लुई पाश्चर' उन्होंने मांगकर पढ़ा। यह नयों में उनके यकीन का परिचायक था। विनोद कुमार शुक्ल जैसी अलीक शख्सियतें जाकर भी नहीं जातीं। वे अपने शब्दों के जरिये हमारे बीच बनी रहती हैं। भौतिक संसार में उनके जाने से जो रिक्तिका बनती है, उसे भरना भला कहां मुमकिन है?

कवि विनोद कुमार शुक्ल को प्रणति

स्मृति शेष

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

हमारे आसपास 'सब होना बचा रहेगा' पर अब कवि विनोद कुमार शुक्ल नहीं होंगे। हम बीत रहे होंगे पर उस समय में विनोद कुमार शुक्ल नहीं होंगे। बस उनकी कविताएं होंगी जिन्हें रचने के लिए रात-दिन जागकर वे अपनी ज़िन्दगी दुगनी करते रहे। पर जीवन की विवशता है कि एक दिन उसे दुनिया छोड़ना पड़ती है। विनोद कुमार शुक्ल को भरोसा था कि दुनिया में अच्छे आदमियों की कमी नहीं है पर उनके न होने से वह एक आदमी तो कम हो ही जायेगा जो हमारी हताशा को पहचानकर अपनी कविता के सहारे हमें गहरी सांत्वना देता रहा।

विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं और कहानियों में ऐसे घर का बसाव दीखता हैं जिसकी दीवारों में स्थानीयता की कोई खिड़की खुली हो और वे उस खिड़की से हमें देख रहे हैं। वे रबर की चप्पल पहनकर हमारे आसपास की गलियों में टहल रहे हैं। वे इस कवि कामना से भी भरे हैं कि कभी दूर से अपना घर देखना चाहिए। इतनी दूर से कि जैसे अंतरिक्ष से पृथ्वी को देख रहे हों और लगे कि घर में बच्चे भूखे होंगे की चिन्ता पृथ्वी पर बच्चे भूखे होंगे की हो सके।

विनोद कुमार शुक्ल की लिखतों में स्थानीय जीवन की दिनचर्या के रूप झलकते हैं। वे जीवन के विद्रूप और विडम्बना को अपने विशिष्ट उक्तिवैचित्र्य से रचते रहे हैं। उनकी लेखनी शब्दों का एक साँचा गढ़ती है और उसी से उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में बसे उनके साँचे शब्द हमें निहारते हैं। किसी से बातचीत में उनकी रुचि बहुत कम ही रही है पर वे अपने लेखन में सबसे खूब बतियाते ही मिलते हैं और उनकी यह बातकही एक मिसाल बन गयी है। वे एक अनूठी मिसाल के तौर पर हमारी यादों में बसे रहेंगे।

जयंती पर विशेष

सुरेन्द्र शर्मा

लेखक भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष हैं।

राजनीति की रपटीली राहों सिद्धांतों के सुमेरु थे अटल जी

अटल बिहारी वाजपेयी एक कवि एक राजनेता एक राष्ट्रभक्त एक ऐसा व्यक्तित्व जिनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र और मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा जो राजनीति की रपटीली राहों पर चलकर भी फिसले नहीं। अपने तो अपने विरोधियों के दिल में भी उनके लिए सदैव सम्मान रहा है और रहेगा जिनके नाम में अटल भी है और बिहारी भी है जो व्यक्तिगत जीवन में फूलों से कोमल रहे हैं तो राष्ट्र हितों के लिए बजट से भी ज्यादा कठोर। भारत देश अपने लाड़ले सपूत पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म शताब्दी वर्ष मना रहा है। अटल जी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर में श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी जी के घर में हुआ था ।

एक शिक्षक के घर जब नन्ही किलकारी गूंजी होगी तब कौन सोच सकता होगा एक दिन यह बालक अपनी वाणी के सम्मोहन से विश्व की राजनीति को भी प्रभावित करेगा। अटल जी का पैतृक गांव बटेश्वर जिसे बृज की काशी भी कहा जाता है शास्त्रों के अनुसार त्रेता युग में भगवान राम के छोटे भाई शत्रुघ्न ने बटेश्वर की स्थापना की बटेश्वर भगवान श्री कृष्ण के पितामह श्री सूर्य सेन की राजधानी भी रही है इसी बटेश्वर की गलियों में बचपन में धमा चौकड़ी मचाने वाला अटल्ला (अटल जी के बचपन का नाम) एक दिन अमेरिका जैसी महाशक्ति को भी झुका देगा यह उस समय कौन कल्पना कर सकता था। अटल जी के पिताजी श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी भारतीय दर्शनशास्त्र के अध्यापक एवं विद्वान थे वह एक अच्छे अध्यापक तो थे ही कविताओं के साथ-साथ उन्हें गीता भागवत और रामायण तथा महाभारत आदि ग्रंथ मुखाग्र याद थे वह आर्य कुमार सभा के सक्रिय कार्यकर्ता थे और ग्वालियर में उनकी प्रतिष्ठा थी।

अटल जी जो पांचवी कक्षा में पढ़ते थे उसे समय उन्हें भाषण देने का पहला अवसर मिला लेकिन घबराहट में वह भाषण ना दे सके और एक और अवसर पर भी उनकी यही स्थिति रही इसके बाद उन्होंने रट कर भाषण देने का विचार त्याग दिया। उनकी मां ने उन्हें 'निर्भय बनो निर्भय रहो' की सीख दी उसी पर उन्होंने चलना तय किया और विश्व के श्रेष्ठ वक्ता बन गए। मैट्रिक पास होने के पश्चात अटल जी ने 1945 तक तत्कालीन विक्टोरिया कॉलेज (अब महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय) मैं अध्ययन किया वह छात्र संघ के महासचिव भी चुने गए। गरीब छात्रों का शुल्क माफ करवाना उन्हें पुस्तक उपलब्ध करवाना छात्रवृत्ति दिलवाना तथा छात्रों को अन्य अनेक समस्याएं सुलझाने के काम अटल जी ने किया जिससे उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण उन दिनों मिट्टी का तेल मिलना कठिन काम हो गया था एवं छात्रों को पढ़ाई करने में काफी परेशानी होने लगी थी अटल जी ने छात्र संघ की ओर से ग्वालियर के एक तत्कालीन शासकीय अधिकारी से भेंट कर छात्रों के लिए मिट्टी के तेल का विशेष कोटा मंजूर करवाया इससे वह छात्रों में बेहद लोकप्रिय हो गए तथा छात्रों ने मिट्टी के तेल का एक लैंप उन्हें भेंट किया।

अटल जी की व्यापक सोच उनके सहपाठियों के साथ संवाद में मिलती थी छात्र साथियों के बीच महानता पर चर्चा करते हुए अटल जी ने कहा 'विजयी शक्ति को ही महान कहना गलत है हार के बाद भी महाराणा प्रताप और पृथ्वीराज चौहान को हम महान कहते हैं बड़प्पन और महानता क्या केवल प्रसिद्धि और यश मिलने से ही साबित होती है बड़ा लेखक, बड़ा खिलाड़ी, बड़ा अभिनेता और बड़ा विजेता ही केवल बड़े होते हैं क्या? मनुष्य छोटा हो या बड़ा सवाल हार जीत का नहीं होता ध्येय का होता है ।देखा यह जाना चाहिए की कोई व्यक्ति दूसरों के प्रति कितना उदार है, कितना संवेदनशील है और उसकी अपनी अवधारणाएं कितनी स्पष्ट है। एम ए पास करने के बाद अटल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने और उन्हें लखनऊ के पास संडीला नामक स्थान पर भेजा गया दिल और दिमाग में निरंतर राष्ट्र चिंतन एक ही ध्येय जय-जय भारत। शाखा कार्य से कभी फुर्सत मिलती तो काफी पाठ या काव्य रचना का काम चलता। 1947 में संघ की विचारधारा को लोगों तक पहुंचाने के लिए 'राष्ट्र धर्म' मासिक पत्रिका को प्रारंभ किया गया पंडित दीनदयाल उपाध्याय उसके मार्गदर्शक थे और अटल जी प्रथम संपादक बने। पंडित जवाहरलाल नेहरू की नीतियों से असहमत होकर तत्कालीन सरकार के उद्योग मंत्री डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सरकार से इस्तीफा दे दिया एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तत्कालीन परम पूज्य संचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर 'श्री गुरु जी' से मंत्रणा कर राष्ट्रवादी दल 'जन संघ' की स्थापना की उनके सहयोग के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पंडित दीनदयाल उपाध्याय सुंदर सिंह भंडारी,नानाजी देशमुख, कुशा भाऊ ठाकरे एवं अटल बिहारी वाजपेयी को जन संघ के कार्य के लिए भेजा गया। जब कश्मीर में परमिट सिस्टम के विरोध में डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी ने आंदोलन किया तब अटल जी एक पत्रकार के रूप में उनके साथ थे बिना परमिट के कश्मीर सीमा में प्रवेश करते ही डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी को गिरफ्तार कर लिया गया डॉक्टर मुखर्जी ने गिरफ्तार होते समय कहा 'अटल जाओ,जाकर देश से कह दो मैंने बिना परमिट कश्मीर में प्रवेश कर लिया है एक देश में दो विधान अब नहीं चलेंगे'। दुर्भाग्य से कश्मीर की जेल में डॉक्टर श्याम प्रसाद मुखर्जी की रहस्य मय मृत्यु हो गई जनसंघ की जिम्मेदारी पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं उनके साथियों के कंधों पर आप पड़ी जिसे उन्होंने प्राणोंपण से निभाया।1953 में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के सोवियत संघ के राजदूत बन जाने के कारण रिक्त हुई सीट पर अटल जी को मध्यावधि चुनाव के लिए उम्मीदवार चुना गया केवल एक माह में 150 से अधिक सभाओं को संबोधित कर अटल जी ने काफी ख्याति अर्जित की हालांकि यह चुनाव कांग्रेस ने जीता पर नवोदित जनसंघ के प्रत्याशी अटल जी दूसरे स्थान पर रहे।

सन 1957 में बलरामपुर लोकसभा सीट से अटल जी सांसद चुने गए संसद में उनकी उपस्थिति गजब की थी ब्रिटेन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उनसे युवा सांसद अटल का परिचय कराते हुए कहा यह विपक्ष का युवा नेता हमेशा मेरी आलोचना करता है पर इसमें मुझे भारत के उज्जवल भविष्य की झलक मिलती है। सातवे दशक में जनसंघ का प्रभाव हर क्षेत्र में बढ़ रहा था परंतु इसी दशक में जनसंघ पर भीषण वज्रपात हुआ पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रहस्यमई परिस्थितियों में मृत्यु हो गई पार्टी ने अटल जी को अध्यक्ष बनाने का फैसला किया श्रद्धांजलि सभा में अटल जी ने कहा 'दीनदयाल जी ने जो ज्योति जलाई है उसे हम ज्वाला कर देंगे' इस उद्बोधन से कार्यकर्ताओं को नई ऊर्जा मिली और एक नई स्फूर्ति प्राप्त हुई।

अटल जी ने वैचारिक मतभेदों को कभी राष्ट्रीय हितों पर हावी नहीं होने दिया भारत पाकिस्तान युद्ध के समय भारत सरकार की भूमिका एवं पृथक बांग्लादेश निर्माण मैं प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की दृढ़ रक्षाशक्ति कि उन्होंने

भूरी भूरी प्रशंसा की। जब देश पर आपातकाल थोपा गया तब 'कैदी कविराय' अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओं ने लोग जागरण का कार्य किया आपातकाल समाप्ति के पश्चात बनी सरकार में अटल जी को विदेश मंत्रालय जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय मिला अटल जी की दूरदर्शिता के कारण उस समय विदेशों के साथ भारत के रिश्ते बेहद मजबूत हुए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसकी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधारा से अटल जी का समर्पण सदैव अटूट रहा जब जनता पार्टी के अंदर दोहरी सदस्यता का मुद्दा उठा जनता पार्टी के संसदीय बोर्ड में कुछ सदस्यों ने कहा कि इस दल के कुछ लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भी सदस्य हैं वह तय करें या तो वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ रहे या जनता पार्टी के साथ रहे संसदीय बोर्ड की बैठक में या सुनकर अटल जी फट पड़े उन्होंने कहा हम जनता पार्टी में केवल 3 वर्ष पहले आए हैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से हमारा रिश्ता बचपन से है और आप चाहते हैं कि हम संघ से नाता तोड़ लें, आपको मालूम है आप क्या कह रहे हैं।

अंततः दोहरी संस्था की मुद्दे पर संघ के स्वयंसेवक जनता पार्टी से अलग हुए एवं 6 अप्रैल 1980 को भारतीय जनता पार्टी बनी इसके अध्यक्ष के रूप में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अटल जी ने कहा 'भाजपा का अध्यक्ष कोई अलंकार की वस्तु नहीं है यह पद नहीं दायित्व है प्रतिष्ठा नहीं परीक्षा है यह सम्मान नहीं चुनौती है मुझे पूरा भरोसा है आपके सहयोग से देश की जनता के समर्थन से मैं इस जिम्मेदारी को ठीक सेनिभा सकूंगा'। अटल जी ने कहा जिन परिस्थितियों में भारतीय जनता पार्टी का निर्माण हुआ है मैं उसको जाना नहीं चाहता देश की राजनीति को अगर नैतिक मूल्यों पर चलाने का संकल्प किसी ने किया है और जो लोग उसे संकल्प को कार्य में परणित करने की शक्ति रखते हैं वह भाजपा के मंच पर इकट्ठे हो गए। अटल जी ने कहा भारतीय जनता पार्टी जयप्रकाश के सपनों को पूरा करने के लिए बनी है जनता पार्टी टूट गई लेकिन हम जयप्रकाश के सपनों को टूटने नहीं देंगे।जयप्रकाश नारायण किसी व्यक्ति का नाम नहीं है जयप्रकाश कुछ आदर्शों का नाम है कुछ मूल्यों का नाम है जयप्रकाश का पूरा जीवन उनकी साधना और उनका संघर्ष कुछ मूल्य के साथ उनकी प्रतिबद्धता यह हमारी विरासत के अंग हैं। अपने भाषण के आखिर में अटल जी ने कहा 'भारत के पश्चिमी घाट को मंडित करने वाले महासागर के किनारे खड़े होकर मैं यह भविष्यवाणी करने का साहस करता हूं की अंधेरा छटेगा सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा।' अटल जी की भविष्यवाणी आज पूरी तरह सच हुई है आज भाजपा केवल भारत की सत्ता में नहीं है देश में 22 से अधिक राज्यों में भाजपा या उसके सहयोगी दलों की सरकार है और भाजपा केवल भारत ही नहीं विश्व की सबसे बड़ी पार्टी आज बन चुकी है। 1996 में पहली बार केवल 13 दिन के लिए प्रधानमंत्री बनने के बाद तथा सन 1999 में मंत्र एक वोट से सरकार गिर जाने जैसी दुखद स्थिति में अटल जी ना तो स्वयं विचलित हुए ना पार्टी के सदस्यों को हार के कारण से दुखी होने दिया।

1996 में जब विश्वास मत हासिल नहीं हुआ तब कांग्रेस के सदस्य अटल जी का उपहार छुड़ा रही थी तब अटल जी ने कहा था मेरी बात को गांठ बांध लें आज हमारे कम सदस्य होने पर आप (कांग्रेस) हंस रहे हैं लेकिन वह दिन आएगा जब पूरे देश में हमारी सरकार होगी उस दिन देश आप पर हंसेगा। अटल जी ने विपक्ष पर जमकर निशाना साधते हुए कहा हमारा क्या अपराध है हमें कटघरे में क्यों खड़ा किया जा रहा है यह जनादेश ऐसे ही नहीं मिला है हमने मेहनत की है इसके पीछे बरसों का संघर्ष है साधना है। हम देश सेवा कर रहे हैं वह भी निस्वार्थ भाव से और पिछले 40 सालों से ऐसे ही करते आ रहे हैं उन्होंने आगे कहा हमने तपस्या की है हम लोगों के बीच गए हैं, यह आकस्मिक नहीं हुआ है हमारी पार्टी कुकुरमुत्ता की तरह उगने वाली पार्टी नहीं है एक-एक सीटों वाली पार्टी है कुकुरमुत्ता की तरह उगते हैं राज्य में आपस में लड़ते हैं और दिल्ली में आकर एक हो जाते हैं उन्होंने कहा हम देश सेवा में लगे रहेंगे विश्राम नहीं करेंगे हम ज्यादा सीटें नहीं ला पाए यह हमारी कमजोरी है हमें बहुमत मिलनी चाहिए थी राष्ट्रपति ने हमें सरकार बनाने का अवसर दिया लेकिन हमें सफलता नहीं मिली हम सबसे बड़े विरोधी दल के रूप में विपक्ष में बैठेंगे और सरकार को हमारा सहयोग लेकर सदन चलना होगा।

संख्या बल के अभाव में अटल जी को इस्तीफा देना पड़ा सरकार गिरी परंतु अटल जी ने हर नहीं मानी उनके भाव तो यही थे 'हार नहीं मानूंगा , रार नई ठानूंगा। काल के कपाल पर, लिखता मिटाता हूं। गीत नया गाता हूं..... सन 1998 में अटल जी का भारत का प्रधानमंत्री बना यह भारत की राजनीति में परिवर्तन का निर्णायक दौर था अटल जी गैर कांग्रेसी पृष्ठभूमि से भारत के पहले प्रधानमंत्री थे भारत के ख्याति नाम सांसद प्रखर विदेश मंत्री के रूप में दुनिया अटल जी को पहले से ही पहचान चुकी थी अपने प्रधानमंत्री काल में प्रधानमंत्री पद एवं भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को अटल जी ने नया ओज प्रदान किया। परमाणु परीक्षणों का कठिन निर्णय उन्होंने जिस पारित एवं कुशल ढंग से किया उसने विश्व पटेल पर भारत की छवि को एकदम से रूपांतरित कर दिया भारत को एक नया व्यक्त प्राप्त हो गया दुनिया में इस संदेश को भली प्रकार से समझा। रूस से मित्रता खोए बिना हम न केवल अमेरिका को मित्र बना सके बल्कि अमेरिका स्वयं भारत की मित्रता अपने को लालायित हो उठा इसी वर्ष अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा एवं अटल बिहारी वाजपेई जी की अमेरिका यात्रा ने दोनों देशों के रिश्तों में और मजबूती का काम किया। पोखरण विस्फोट के पश्चात अटल जी ने कहा था हम में से हर एक का मस्तक उस दिन उन्नत हुआ सीना चौड़ा हुआ क्योंकि उसे दिन पोखरण में केवल अणु ऊर्जा का ही प्रकटीकरण नहीं हुआ बल्कि राष्ट्रीय ऊर्जा का प्रकृति कारण हुआ था। अपने व्यवहार अपने कर्तव्य से अटल जी ने देशवासियों के दिल पर राज किया राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण के लिए सन 1992 में उन्हें 'पद्म विभूषण' तथा सन 1994 में 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' का सम्मान मिला। राष्ट्र के लिए उनके उत्कर्ष सेवा के लिए वर्ष 2015 में देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से पूरे सम्मानित किया गया जिसके वह वास्तविक अधिकारी थे। उस दिन भारत माता भी अपने सपूत को सम्मानित होते देखकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही होगी।

भारतीय राजनीति के शिखर पर पहुंचने के साथ ही विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता बनने के पश्चात भी अटल जी का संपर्क सदैव जमीन से जुड़ा रहा हर कार्यकर्ता को लगता था कि वह अटल जी का सबसे नजदीकी मित्र है अटल जी का नाम आते ही हर किसी के मुंह से निकलता था 'अपने अटल जी' अटल जी के मन में सदैव यही भाव रहा मेरे प्रभु मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना गैरों को गले लगा ना सकूं इतनी रुखाई कभी मत देना अटल जी पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सच्चे अनुवाई थे 16 अगस्त 2018 को भारतीय राजनीति का यह ध्रुव तारा सदैव के लिए अस्त हो गया। अटल जी की मृत्यु पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा था 'मैं निशब्द हूं, शून्य में हूं,' लेकिन भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा है श्रद्धेय अटल जी हमारे बीच में नहीं रहे यह मेरे लिए निजी क्षति है। अटल जी ने अपने जीवन का प्रत्येक पल राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया उनका जाना एक युग का अंत है लेकिन वह हमें कह कर गए है- मौत की उम्र क्या है?

दो पल भी नहीं।
जिंदगी का सिलसिला,
आज है कल नहीं।
मैं जी भर जिया,
मैं मन से मरूं।
लौट कर आऊंगा,
कूच से क्यों डरूं??

श्रद्धेय अटल जी आज भले ही भौतिक रूप में हमारे बीच में नहीं और उनके द्वारा दिखाया गया मार्ग भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं को सदैव मार्गदर्शित करता रहेगा।

कृषि

विकसित भारत का कृषि मॉडल-गौ-आधारित प्राकृतिक खेती और स्वस्थ जीवन

राजेंद्र शुक्ल
(लेखक मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री हैं)

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज विकास के उस मार्ग पर अग्रसर है, जहाँ आर्थिक प्रगति के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सांस्कृतिक मूल्यों को समान महत्व दिया जा रहा है। इसी समग्र दृष्टि के अंतर्गत भारतीय कृषि को भी एक नए युग की ओर ले जाया जा रहा है। कृषि सदियों से हमारी सभ्यता की रीढ़ रही है। आधुनिक युग में रासायनिक उर्वरकों और सिंथेटिक कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भरता ने खेती की लागत बढ़ाने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता, उसकी जलधारण क्षमता और दीर्घकालिक स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप, हमारे भोजन की गुणवत्ता और नागरिकों के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि भारत की समस्याओं का समाधान हमारी अपनी परंपराओं और ज्ञान प्रणाली में निहित है। इसी विचार से प्राकृतिक खेती को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहन मिल रहा है, जो भारतीय कृषि की मूल आत्मा से जुड़ी हुई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि कृषि को केवल उत्पादन के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, स्थिरता और आत्मनिर्भरता के व्यापक संदर्भ में देखा जाए।

भारत की पारंपरिक कृषि व्यवस्था सह-अस्तित्व और संतुलन पर आधारित रही है, जिसमें गौमाता की भूमिका केंद्रीय रही है। गौ केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि उत्पादकता और पोषण सुरक्षा का आधार रही हैं। हमारे पूर्वज जानते थे कि गौवंश का संरक्षण सीधे मिट्टी के स्वास्थ्य से जुड़ा है। गोबर और गोमूत्र से भूमि को पोषण मिलता है, सूक्ष्म जीव सक्रिय होते हैं और मिट्टी पुनः जीवंत होती है। स्वस्थ मिट्टी से प्राप्त अन्न अधिक पौष्टिक, सुरक्षित और मानव शरीर के अनुकूल होता है।

प्राकृतिक खेती कृषि तकनीक नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति

प्रधानमंत्री मोदी जी की दृष्टि में प्राकृतिक खेती केवल एक कृषि तकनीक नहीं, बल्कि जीवन जीने की भारतीय पद्धति है। वे इसे किसानों की लागत घटाने, आय बढ़ाने और उन्हें बाहरी निर्भरता से मुक्त करने

का सशक्त माध्यम मानते हैं। साथ ही, यह देशवासियों को रसायन-मुक्त, विषरहित भोजन उपलब्ध कराने का मार्ग है। यही कारण है कि प्राकृतिक खेती को आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के लक्ष्य से जोड़ा गया है।

प्राकृतिक खेती की कार्यप्रणाली सरल, स्वदेशी और प्रभावशाली है। इसमें गौशालाओं को केवल संरक्षण केंद्र नहीं, बल्कि कृषि आदानों के उत्पादन के आर्थिक केंद्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। गोबर और गोमूत्र से तैयार जीवामृत, बीजामृत और पंचगव्य जैसे प्राकृतिक इनपुट मिट्टी के सूक्ष्म जीवों को सक्रिय करते हैं और भूमि की उर्वरता को दीर्घकालिक रूप से बढ़ाते हैं। पलवार (मल्चिंग) जैसी तकनीकें मिट्टी की नमी बनाए रखती हैं, जल संरक्षण में सहायक होती हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से फसलों की रक्षा करती हैं। इन उपायों से खेती की लागत में उल्लेखनीय कमी आती है, जिससे शून्य बजट प्राकृतिक खेती का लक्ष्य व्यवहारिक रूप से संभव होता है।

सहकारिता से समृद्धि और संस्थागत शक्ति

प्राकृतिक खेती को जन-आंदोलन बनाने में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके विजन 'सहकारिता से समृद्धि' के तहत, प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को संगठित किया जा रहा है एवं किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को सशक्त बनाया जा रहा है ताकि छोटे किसानों को न केवल सस्ती दरों पर प्राकृतिक खाद-बीज मिल सकें, बल्कि उनके विषमुक्त उत्पादों को उचित बाजार और लाभकारी मूल्य भी प्राप्त हो सके। गौ-आधारित प्राकृतिक खेती और सहकारिता का मेल ही ग्रामीण समृद्धि का नया मार्ग है। प्राकृतिक खेती का महत्व केवल खेत तक सीमित नहीं है; इसका सीधा संबंध मानव स्वास्थ्य और जीवनशैली से है। आज जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ तेजी से बढ़ रही हैं, जिनका एक बड़ा कारण रासायनिक अवशेषों से युक्त भोजन है। प्राकृतिक खेती से प्राप्त शुद्ध और विषमुक्त अन्न पाचन तंत्र को सुदृढ़ करता है, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और दीर्घकालिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है।प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा योग और आयुष को वैश्विक पहचान दिलाना इसी समग्र स्वास्थ्य दृष्टि का हिस्सा है। योग, प्राणायाम और संतुलित दिनचर्या तभी पूर्ण लाभ देती है जब भोजन भी शुद्ध और प्राकृतिक हो। प्राकृतिक खेती, स्वस्थ भोजन और योग—तीनों मिलकर स्वस्थ भारत की परिकल्पना को साकार करते हैं। प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी का व्यावहारिक मंत्र—'एक एकड़, एक मौसम'—किसानों के लिए प्रेरणास्रोत है। छोटे स्तर पर प्रयोग कर किसान बिना जोखिम उठाए परिणाम देख सकता है और फिर धीरे-धीरे विस्तार कर सकता है। केंद्र सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन, आदानों की उपलब्धता और बाजार से जोड़ने के लिए मजबूत संस्थागत समर्थन दिया जा रहा है। किसान उत्पादक संगठन (FPOs) इस दिशा में अहम भूमिका निभा रहे हैं, जिससे छोटे और सीमांत किसानों को सामूहिक शक्ति प्राप्त हो रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि महिला किसान इस परिवर्तन में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

इस संपूर्ण प्रयास में गौ-सेवा का स्थान केंद्रीय है। गौवंश का संरक्षण और संवर्धन केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण रोजगार और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी जी की दृष्टि में गौ-आधारित प्राकृतिक खेती ग्रामीण भारत को सशक्त बनाने और सतत विकास सुनिश्चित करने का एक प्रभावी माध्यम है। मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी की इस दूरदर्शी सोच को धरातल पर उतारने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। राज्य में प्राकृतिक खेती, गौ-संवर्धन और किसान कल्याण को समन्वित रूप से आगे बढ़ाया जा रहा है। हमारा लक्ष्य केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि मिट्टी, किसान और उपभोक्ता—तीनों के स्वास्थ्य की रक्षा करना है।

गौ-आधारित प्राकृतिक खेती, भारतीय जीवनदृष्टि का पुनर्जागरण

गौ-आधारित प्राकृतिक खेती केवल कृषि सुधार की पहल नहीं, बल्कि भारतीय जीवनदृष्टि का पुनर्जागरण है। गौमाता और मिट्टी की रक्षा के अपने सांस्कृतिक दायित्व को निभाते हुए, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ भोजन, संतुलित जीवनशैली और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं। यही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित, आत्मनिर्भर और स्वस्थ भारत के स्वप्न को साकार करने का सशक्त मार्ग है।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर के प्रयासों से धार-महू लोकसभा क्षेत्र को विकास की ऐतिहासिक सौगात

धार। महू लोकसभा क्षेत्र सांसद एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर के प्रयासों ने समग्र विकास की दिशा में एक और ऐतिहासिक कदम उठाते हुए मध्य प्रदेश मंत्रिमंडल द्वारा बड़वाह-धामनोद चार लेन मार्ग (लंबाई 62.795 किलोमीटर) के निर्माण समेत 2500 करोड़ से अधिक की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की है। यह परियोजना हाइब्रिड एन्युटी मॉडल (HAM) के अंतर्गत भूमि अर्जन सहित विकसित की जाएगी, जिससे क्षेत्र में आधारभूत संरचना को नई मजबूती मिलेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में बुनियादी ढांचे का जो व्यापक विस्तार हो रहा है, यह परियोजना उसी दूरदर्शी सोच का सशक्त उदाहरण है।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए यात्रा सुगम, सुरक्षित एवं समयबद्ध होगी – यह चार लेन मार्ग न केवल दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्गों को आपस में जोड़ेगा, बल्कि महेश्वर, ओंकारेश्वर, उज्जैन सहित क्षेत्र के अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक केंद्रों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। विशेष रूप से ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए यह मार्ग यात्रा को अधिक सुगम, सुरक्षित एवं समयबद्ध बनाएगा।

बड़वाह-धामनोद फोरलेन मार्ग हेतु करोड़ों की स्वीकृत

आगामी सिंहस्थ महापर्व को दृष्टिगत रखते हुए यह मार्ग उज्जैन पहुँचने वाले लाखों श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा। बेहतर सड़क सुविधा से यातायात का दबाव कम होगा, दुर्घटनाओं में कमी आएगी तथा श्रद्धालुओं को सहज और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव प्राप्त होगा। इस परियोजना के पूर्ण होने से क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति मिलेगी। व्यापार, उद्योग, कृषि परिवहन, पर्यटन एवं रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। स्थानीय युवाओं को निर्माण कार्य एवं भविष्य में होने वाली व्यावसायिक गतिविधियों से रोजगार मिलेगा, जिससे क्षेत्र की आर्थिक सशक्तता बढ़ेगी। धार-महू लोकसभा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए महू लोकसभा क्षेत्र सांसद एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर सदैव प्रतिबद्ध रही है और आगे भी केंद्र एवं राज्य सरकार के सहयोग से सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, सिंचाई एवं पर्यटन से जुड़े विकास कार्यों को प्राथमिकता देती रहेगी।

- मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत यह सड़क परियोजना 'विकसित भारत' और 'विकसित मध्य प्रदेश' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है
- मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत यह सड़क परियोजना 'विकसित भारत' और 'विकसित मध्य प्रदेश' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- क्षेत्र की जनता के विश्वास और सहयोग से हम निरंतर विकास की इस यात्रा को आगे बढ़ाते रहेंगे। बड़वाह-धामनोद फोरलेन मार्ग निश्चित रूप से धार-महू लोकसभा क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।
- इस महत्वपूर्ण निर्णय के लिए सावित्री ठाकुर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति धार-महू लोकसभा क्षेत्र की जनता की ओर से हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया है।

प्रशासनिक तंत्र की सक्रियता और ग्राहकों की जागरूकता से ही उपभोक्ताओं का शोषण रोका जा सकता है

- अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन ने मनाया राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस, जिले में 1000 सदस्य बनाने का रखा लक्ष्य

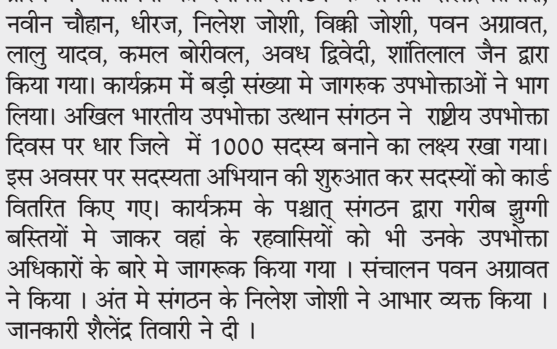

धार। 24 दिसम्बर को धार में अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन के तत्वाधान में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस पर सेमिनार का आयोजन किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अजय चौधरी थे। अध्यक्षता अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन के संभागीय अध्यक्ष डॉ.अशोक शास्त्री ने की। विशेष अतिथि के रूप में अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन के जिलाध्यक्ष धर्मेन्द्र जोशी थे। विशिष्ठ अतिथि मोटिवेशनल स्पीकर राजेश शर्मा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ.अशोक शास्त्री ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे आनलाईन ठगी से कैसे बचाव हो इस पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित लोगों को अपने उपभोक्ता अधिकार के संबंध जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक कसावट लाए बिना उपभोक्ताओं को न्याय नहीं दिलाया जा सकता। मुख्य अतिथि अजय चौधरी ने आज के उपभोक्तावाद पर प्रकाश डालते हुए उपभोक्ताओं को जागरूक रहकर काम करने की सलाह दी। इस अवसर पर विशेष अतिथि राजेश शर्मा ने कहा कि बढ़ती मंहगाई एवं बाजारवाद के दोर में उपभोक्ता ठगा जा रहा है। शासन प्रशासन को चाहिए की कीमतों पर एवं मिलावट पर रोक हेतु कठोर कदम उठाना चाहिए । उन्होने उपभोक्ता संरक्षण कानून, उपभोक्ताओं के अधिकार , कानूनी प्रावधानों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रारंभ मे अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। संगठन के जिलाध्यक्ष धर्मेन्द्र जोशी ने स्वागत भाषण देते हुए संगठन की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि वर्ष भर हुए कार्यक्रमों का रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत किया। प्रारंभ मे अतिथियों का स्वागत संगठन के सर्वश्री शैलेंद्र तिवारी, नवीन चौहान, धीरज, निलेश जोशी, विक्की जोशी, पवन अग्रावत, लालु यादव, कमल बोरीवल, अवध द्विवेदी, शांतिलाल जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या मे जागरुक उपभोक्ताओं ने भाग लिया। अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन ने राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस पर धार जिले में 1000 सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया। इस अवसर पर सदस्यता अभियान की शुरुआत कर सदस्यों को कार्ड वितरित किए गए। कार्यक्रम के पश्चात् संगठन द्वारा गरीब झुग्गी बस्तियों मे जाकर वहां के रहवासियों को भी उनके उपभोक्ता अधिकारों के बारे मे जागरूक किया गया । संचालन पवन अग्रावत ने किया । अंत मे संगठन के निलेश जोशी ने आभार व्यक्त किया । जानकारी शैलेंद्र तिवारी ने दी ।

शहर के प्रमुख चौक-चौराहों पर लग रहे एडवांस टेक्नोलॉजी के कैमरे

संदिग्ध और आदतन अपराधियों की आंख, चेहरे और चाल की स्कैनिंग कर कैमरे करेंगे अलर्ट जारी

बैतूल। शहर के प्रमुख चौक-चौराहों पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई इनेबल्ड और फेशियल रिकगनिशन एप्लीकेशन वाले सीसीटीवी कैमरे लगाये जा रहे है। इसकी शुरूआत शहर में स्टेडियम चौराहे से कर दी है। इन कैमरों की खाशियत यह है कि यह आंख, चेहरे के आकार और चाल की

स्कैनिंग करेगे। संदिग्ध और आदतन अपराधियों के चेहरे, स्केच, फोटो, आंख की पुतलियों, चाल के डाटा से मेल खाते हुए लोगों के दिखाई देने पर यह कैमरे अलर्ट जारी कर देंगे। इससे अपराधियों की धरपकड़ आसान होगी। यह कैमरे एचडी यानी हाई डेफिनेशन और नाइट विजन वाले होंगे। जो लोगों की आंखों की पुतलियों, चेहरे और चाल की स्कैनिंग करने में सक्षम होंगे। वैसे शहर के मुख्य चौक-चौराहों पर सीसीटीवी कैमरे लगे हुए है, लेकिन इन कैमरों की एडवांस टैक्नोलॉजी से संदिग्ध और अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों की धरपकड़ आसान होगी, क्योंकि यह कैमरे संदिग्ध और आदतन अपराधियों के चेहरे, स्केच, फोटो, आंख की पुतलियों, चाल के डाटा से मेल खाते लोगों के दिखाई देने पर जारी करेंगे।

9 प्रमुख चौक-चौराहों पर लगेगे कैमरे – शुरुआत में शहर के 9 प्रमुख चौराहों, कारगिल चौक, नेहरू पार्क के सामने, लक्ष्मी चौक, गंज मैकेनिक चौक, सदर गेंदा चौक समेत अन्य जगहों पर ये कैमरे लगाए जाएंगे। इसके बाद जिले में अन्य संवेदनशील क्षेत्रों में भी ये कैमरे लगाए जाएंगे। यह कैमरे जो भी रिकॉर्ड करेंगे, उससे पुलिस विभाग की ओर से अपराधियों के आधार कार्ड के फोटोग्राफ, पुतलियों का डाटा मैच किया जाएगा। यदि कोई भी फरार आरोपी का डाटा इससे मैच खाएगा, तो इन कैमरों का एप्लीकेशन तुरंत इस तरफ संकेत दे देगा और अपराधियों को तुरंत पकडऩा आसान हो जाएगा।

चेहरे को कैमरे में कैप्चर कर किया जायेगा मिलान – 18 लाख की जनसंख्या वाले जिले में लगभग इतने ही आधार हैं। इन सभी आधार के फोटोग्राफ, आंखों की पुतलियों का डाटा, चेहरे का आकार और आकृति रहती है। पहले इस फेस रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी से चेहरे को कैमरे में कैप्चर किया जाएगा। इसके बाद चेहरे की पहचान करने या फिर उसके हाव-भाव समझने के लिए कंप्यूटर के डाटा का इस्तेमाल करके आंखों या ठुड्डी के आकार और नाक और होंठ के बीच की दूरी जैसे पैमाने इसमें मदद करते हैं। यह टेक्नोलॉजी पहले से सेव डाटा का एनालिसिस कर किसी चेहरे से मिलान कर सकती है। फेस डिटेक्शन और एनालिसिस के बाद आखिरी चरण के तौर पर डाटा का मिलान किया जाता है।

अपराधियों के स्केच भी इसमें किए जा सकेंगे अपलोड– पुलिस विभाग की ओर से यदि कोई स्केच यदि किसी मामले में अपराधियों का बनवाया जाता है तो भविष्य में इस स्केच को भी इन कैमरों के डाटा से मिलान किया जा सकेगा। इस मिलान के बाद इस स्केच से मेल खाते सभी चेहरे इसमें देखे जा सकेंगे। इससे अपराधी तुरंत पकड़े जा सकेंगे। जगह-जगह तलाशने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। पुलिस विभाग के अपराध के रिकॉर्ड के अपराधियों के डाटा में जो भी फोटोग्राफ, आंखों की पुतली का रिकॉर्ड होगा उससे इस चौराहों पर लगे कैमरों के डाटा से मिलान किया जाएगा। चौराहों से यदि वह अपराधी गुजरता है तो उसके चेहरे का मिलान होते ही यह एप्लीकेशन इंडीकेट करेगा और उसे चिन्हित किया जाएगा।

सिंहस्थ 2028 तक धार में रेल लाने ,छोटा-उदयपुर धार रेल परियोजना के लिये मुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

धार। इंदौर दाहोद एवं छोटा उदयपुर धार रेल लाओ महासमिति ने मंगलवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के धार आगमन पर हेलीपेड पर मुलाकात कर रेल लाओ महासमिति के केन्द्रिय अध्यक्ष पवन जैन गंगवाल ने ज्ञापन सौंपा। धार झाबुआ अलिराजपुर आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के विकास के लिये इस परियोजना को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गति प्रदान की है अब आपके छोटे से प्रयास से वर्षो पुरानी मांग पुरी हो सकती है। इंदौर-दाहोद रेल जो 205 किमी की है जो सन् 2026 तक इंदौर से धार और दाहोद से झाबुआ 125 किमी पुरी होने की संभावना है । धार से झाबुआ 80 किमी पर रेल का सर्वे भुमि अधिग्रहण का कार्य चल रहा है जिसमे 3 सुरंगे और बनना शेष है जिसमें वर्षो लग जायेगे। धार और झाबुआ में रेल आने से जनता और सरकार व उद्योगो को कोई फायदा होने वाला नही है। दुसरी तरफ छोटा उदयपुर धार रेल जो 145 किमी है उसमें से 102 किमी का कार्य सन् 2026 तक काकडवा से टांडा तक पुरा होना है टांडा रोड से तिरला धार 43 किमी का भाग पर निर्माण होना शेष है इस छोटे से 43 किमी मार्ग को आपके रेल विकास योजना में प्राथमिकता के आधार पर शामिल कर सिंहस्थ 2028 तक पूरा करवाकर आने वाले श्रद्धालुओं, मध्यप्रदेश गुजरात के आदिवासी अंचल के औद्योगिक क्षेत्र को सीधा लाभ मिल सकता है। इंदौर से बाम्बे की 120 किमी की दूरी भी कम हो जाएगी। पीथमपुर जैसे बडे औद्योगिक क्षेत्र को गुजरात और बंबई के बंदरगाहो से सीधा रेल संपर्क मिलने से माल परिवहन सस्ता व तेज होगा जिससे उद्योगों की लागत घटेगी और रोजगार के नये अवसर सुजित होगें और आदिवासियों का पलायन रूकेगा। ज्ञापन देते समय समिति के पवन जैन गंगवाल, प्रवीण टांक, कमल हारोड, शांतीलाल शर्मा उपस्थित थे।

आरडी कोचिंग से साकार हो रहे आईआईटी और मेडीकल के सपने : डीडी उइके

आरडी संस्थान बैतूल में आयोजित हुआ सम्मान समारोह

बैतूल। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए मशहूर आरडी संस्थान बैतूल में 24 दिसम्बर को आयोजित भव्य सम्मान समारोह में संस्थान में अध्ययनरत् रहकर आईआईटी मेन्स एडवांस एवं मेडीकल कॉलेजों में चयनित हुए 30 विद्यार्थियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके एवं आरडी संस्थान की निदेशक श्रीमती ऋचु खण्डेलवाल ने देश के प्रतिष्ठित तकनीक एवं चिकित्सा संस्थानों में चयनित छात्र-छात्राओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित किया और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। आरडी संस्थान में हुए सम्मान से भावी इंजीनियर और डाक्टर अभीभूत हो गए। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके ने आरडी संस्थान में विद्यार्थियों को क्वालिटी एजुकेशन,

प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करवाने के साथ ही जीवनमूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। यह राष्ट्र निर्माण में महत्वूपर्ण योगदान है। उन्होने कहा कि आरडी संस्थान के विद्यार्थी देश के प्रतिष्ठित आईआईटी और मेडिकल संस्थानो में चयनित होकर राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करेंगे। केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री उइके ने विद्यार्थियों को समाज और देश के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी। बैतूल जिले के लिए गौरव का विशय है कि आरडीसीसी से 100 से ज्यादा बच्चे आईआईटी, एनआईटी में चयनित तथा 70 से ज्यादा मेडीकल कॉलेज में चयनित हुए है और अपने सपने को साकार कर रहे है एवं अपने अभिभावको एवं जिले का नाम रौशन कर रहे है।

लक्ष्य हासिल करने सतत परिश्रम करें-ऋचु खण्डेलवाल – सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए आरडी संस्थान की निदेशक श्रीमती ऋचु खण्डेलवाल ने कहा कि यह उत्कृष्ठ सफलता विद्यार्थियों की कडी मेहनत, अभिभावको के सहयोग और शिक्षकों के सतत मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होने संस्थान के शिक्षकों के समर्पण की सराहना की। निदेशक श्रीमती खण्डेलवाल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अनुशासित रहकर निरंतर परिश्रम करें। आरडी संस्थान में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में आईआईटी सहित मेडीकल संस्थानों में चयनित संस्थान के 30 छात्र-छात्राओं को केन्द्रीय राज्य मंत्री डीडी उइके एवं संस्थान की निदेशक श्रीमती ऋचु खण्डेलवाल ने सम्मानित किया। सम्मान समारोह में मंच से अपने अनुभव सांझा करते हुए सभी शिक्षकों एवं संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया। सम्मान समारोह में विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत और संस्थान की शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रतीक रहा।

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत कृषि सखियों को दिया गया पांच दिवसीय प्रशिक्षण

सीहोर (निप्र)। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत जिले में रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों को कम करने और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीहोर स्थित कृषि महाविद्यालय में पांच दिवसीय कृषि सखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण का कार्यक्रम का समापन ग्राम भाऊखेड़ी स्थित आजीविका पार्क में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में जिले के समस्त विकासखंडों से चयनित 50 कृषि सखियों ने प्राकृतिक खेती के विभिन्न आयामों से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान कृषि सखियों को कृषि महाविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा प्राकृतिक खेती एवं उससे संबंधित विभिन्न विषयों पर सैद्धांतिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। साथ ही, फील्ड विजिट के माध्यम से प्राकृतिक खेती की तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान भी उपलब्ध कराया, ताकि वे जमीनी स्तर पर किसानों को प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों द्वारा प्राकृतिक खेती को दीर्घकालीन रूप से टिकाऊ, लागत कम करने वाली, किसानों की आय बढ़ाने वाली तथा पर्यावरण एवं मृदा संरक्षण पर आधारित उन्नत खेती प्रणाली बताया गया।

पशुपालन के अंतर्गत पशुओं का समय पर टीकाकरण, संतुलित आहार देना एवं कृत्रिम गर्भाधान जैसे महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी गई। इसके साथ ही मृदा परीक्षण के महत्व तथा मिट्टी का नमूना सही तरीके से लेने की विधि भी समझाई गई, ताकि किसान अपनी जमीन के अनुसार सही फसल और खाद का उपयोग कर सकें। फसलों को कीट एवं रोगों से बचाने के लिए प्राकृतिक कीटनाशकों जैसे ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र और नीमास्त्र बनाने पर विशेष जोर दिया गया, जिन्हें किसान अपने खेत पर आसानी से तैयार कर सकते हैं। ये उपाय रासायनिक दवाओं की तुलना में सस्ते, सुरक्षित और पर्यावरण के लिए लाभकारी हैं। जिससे किसानों को आर्थिक लाभ के साथ-साथ स्वस्थ एवं सुरक्षित उत्पादन प्राप्त होता है। अधिकारियों ने कृषि सखियों से अपेक्षा व्यक्त की कि वे प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग करते हुए ग्राम स्तर पर किसानों को प्राकृतिक खेती की तकनीकों, लाभों एवं सफल उदाहरणों की जानकारी दें तथा अधिक से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने हेतु प्रेरित कर आत्मनिर्भर एवं पर्यावरण-अनुकूल कृषि व्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ाएं। कृषि सखियों ने भी अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण उनके लिए बहुत उपयोगी और ज्ञानवर्धक रहा। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें प्राकृतिक खेती की सरल तकनीकें, देसी इनपुट बनाने की जानकारी तथा फसल प्रबंधन से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ। कृषि सखियों ने कहा कि सैद्धांतिक जानकारी के साथ फील्ड विजिट से उन्हें प्राकृतिक खेती को समझने में आसानी हुई। कार्यक्रम के अंत में सभी कृषि सखियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए और अपने क्षेत्रों में जाकर किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक करने का संकल्प दिलाया गया। समापन कार्यक्रम में संचालनालय उप संचालक श्री अवनीश चतुर्वेदी, उप संचालक कृषि श्री अशोक कुमार उपाध्याय, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. एस. गाठिए, एनआरएलएम के डीपीएम श्री दिनेश बर्फा सहित अन्य अधिकारी एवं कृषि सखियां उपस्थित थीं।

पीएमसीओई जेएच शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय गणित दिवस का शुभारंभ

बैतूल (निप्र)। पीएमसीओई जेएच शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल में मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, विज्ञान भवन भोपाल एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय गणित दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ 23 दिसंबर को किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मीनाक्षी चौबे के निर्देशन, डॉ. खुशाल देवघरे के मार्गदर्शन तथा कार्यक्रम संयोजक श्रीमती सोनाली सैनी साहू के संयोजन में किया जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व प्राध्यापक , गणित विभाग डॉ. आरडी डहेरिया तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री घनश्याम मदान उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अनीता सोनी द्वारा की गई। कार्यक्रम में अन्य अतिथियों के रूप में डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, श्रीमती अर्चना सोनारे एवं श्री राकेश पंवार उपस्थित रहे। राष्ट्रीय गणित दिवस भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इसी क्रम में कार्यक्रम के प्रथम दिवस विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं बौद्धिक क्षमताओं के विकास हेतु गणित विषय पर आधारित रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता एवं प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

संक्षिप्त समाचार

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत हस्ताक्षर अभियान चलाकर जागरूकता फैलाई गई

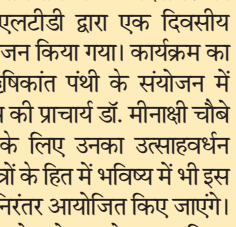

हरदा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग के निर्देशानुसार बाल विवाह की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में हरदा में भी कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के मार्गदर्शन में हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया। कलेक्टर श्री जैन ने सोमवार को कलेक्ट्रेट परिसर में संकल्प हस्ताक्षर अभियान के पोस्टर पर हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्री राजा रंगारे ने पोस्टर पर हस्ताक्षर किये तथा सेल्फी भी ली श्री रंगारे ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षा, सुरक्षा और स्वास्थ्य के अधिकार सुनिश्चित कर उन्हें सशक्त बनाना है, क्योंकि बाल विवाह इन सभी के विकास में एक बड़ी बाधा है। यह अभियान बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति को समाप्त करने भारत को बाल विवाह मुक्त बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के सामूहिक संकल्प का हिस्सा है। अभियान के दौरान प्रतिभागियों ने हस्ताक्षर कर शपथ ली कि वे अपने परिवार, पड़ोस और समुदाय में बाल विवाह नहीं होने देंगे।

जेएच कॉलेज में एक दिवसीय प्लेसमेन्ट ड्राइव का आयोजन

बैतूल (निप्र)। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस जयवंती हॉकसर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल में स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में 22 दिसंबर को आईपीसीए लेबोरेटरीज एलटीडी द्वारा एक दिवसीय प्लेसमेन्ट ड्राइव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन टीपीओ प्रो. ऋषिकांत पंथी के संयोजन में संपन्न हुआ। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मीनाक्षी चौबे ने विद्यार्थियों के चयन के लिए उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि छात्रों के हित में भविष्य में भी इस प्रकार के प्लेसमेंट ड्राइव निरंतर आयोजित किए जाएंगे। वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश शेषकर ने चयन प्रक्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए तथा दैनिक समाचार पत्रों के अध्ययन से वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने पर जोर दिया। आईपीसीए लेबोरेटरीज एलटीडी की ओर से इंदौर एवं नागपुर से प्रतिनिधि उपस्थित रहे, जिनमें एजीएम/ एचआर हेड श्री बलराम शर्मा, असिस्टेंट मैनेजर श्री हेमंत तोमर, एसीसी/एचआर श्री रवि पांड्या एवं सीनियर एग्जीक्यूटिव श्री तोषीक रियाज शामिल थे। इस अवसर पर श्री शर्मा ने कंपनी एवं करियर अवसरों की जानकारी दी। चयन प्रक्रिया लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के माध्यम से पूरी की गई। ड्राइव में 58 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से प्रारंभिक रूप से 28 विद्यार्थियों का चयन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रो. संतोष पवार, डॉ. निशा मालवी एवं सुश्री गायत्री यादव का सराहनीय योगदान रहा।

हलाली डेम नहर प्रबंधन पर कलेक्टर ने जताई संतुष्टि, जल संसाधन विभाग की प्रशंसा

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान हलाली डेम से संचालित नहर प्रणाली के माध्यम से सिंचाई का पानी टेल क्षेत्र तक सुचारु रूप से पहुंचने पर संतोष व्यक्त किया। बैठक में बताया गया कि नहरों के संचालन एवं जल वितरण में किसी भी प्रकार की समस्या अथवा शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि नहरों के माध्यम से अंतिम छोर (टेल क्षेत्र) तक किसानों को समय पर सिंचाई जल उपलब्ध कराया जाना जल संसाधन विभाग के बेहतर कार्य, सुदृढ़ प्रबंधन एवं सतत निगरानी का परिणाम है। उन्होंने जल संसाधन विभाग द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रबंधन की भूरी-भूरी प्रशंसा की। समीक्षा के दौरान अधिकारियों ने नहर संचालन, जल वितरण व्यवस्था, निगरानी तंत्र एवं किसानों से प्राप्त फीडबैक की जानकारी भी प्रस्तुत की। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि भविष्य में भी इसी प्रकार समन्वय और सतर्कता के साथ कार्य करते हुए किसानों को निर्बाध रूप से सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाए, ताकि कृषि उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो सके।

लंबित आवेदनों की समीक्षा बैठक, कलेक्टर ने लिया निराकरण की अद्यतन स्थिति का जायजा

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने सोमवार को आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान विभिन्न विभागों में लंबित आवेदनों के निराकरण की अद्यतन स्थिति का जायजा लिया। बैठक में सीएम हेल्पलाइन, समाधान ऑनलाइन के विषय आधारित लंबित आवेदनों के साथ-साथ विभिन्न वरिष्ठ कार्यालयों से प्राप्त पत्रों एवं जनसुनवाई कार्यक्रम के शेष आवेदनों की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान संबंधित विभागीय अधिकारियों ने अपने-अपने विभागों में लंबित आवेदनों की स्थिति, अब तक किए गए निराकरण तथा शेष प्रकरणों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने निर्देश दिए कि सभी लंबित आवेदनों का प्राथमिकता के आधार पर समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित किया जाए तथा निराकरण में गुणवत्ता और संतुष्टि का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई, सीएम हेल्पलाइन एवं समाधान ऑनलाइन के माध्यम से प्राप्त आवेदन आम नागरिकों की समस्याओं से सीधे जुड़े होते हैं, अतः इनके निराकरण में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। कलेक्टर ने अधिकारियों को नियमित मॉनिटरिंग करने, आवेदकों से संवाद बनाए रखने एवं निराकरण की स्थिति से उन्हें अवगत कराने के निर्देश भी दिए। सीएम हेल्पलाइन ग्राफ में गिरावट का जिक्र सीआर में कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने विभागीय अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि यदि किसी विभाग की सीएम हेल्पलाइन रैंकिंग अथवा ग्राफ में गिरावट आती है, तो इसकी जिम्मेदारी संबंधित अधिकारियों की मानी जाएगी। ऐसे मामलों में उक्त गिरावट का उल्लेख संबंधित अधिकारियों की गोपनीयता चरित्रवली (सीआर) में किया जाएगा।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन शासन की एक महत्वपूर्ण जनसमस्या निवारण प्रणाली है, जिसके माध्यम से आम नागरिकों की शिकायतों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निराकरण अपेक्षित है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त शिकायतों का गंभीरता से अध्ययन कर त्वरित, संतोषजनक एवं स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि लापरवाही, विलंब अथवा असंतोषजनक निराकरण की स्थिति में संबंधित अधिकारी व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे। कलेक्टर ने सभी विभागों को सीएम हेल्पलाइन की नियमित समीक्षा, निगरानी एवं निराकरण की गुणवत्ता सुधारने के निर्देश दिए, ताकि जिले की रैंकिंग में निरंतर सुधार बना रहे।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा की अध्यक्षता में सबमिशन आन एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन अंतर्गत आत्मा गर्वनिंग बोर्ड की बैठक सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में सबमिशन आन एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन अंतर्गत आत्मा गर्वनिंग बोर्ड की बैठक सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा जिले में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन, जिला स्तरीय कृषि विज्ञान मेले का आयोजन तथा आत्मा की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। उन्होंने बैठक में उपस्थित कृषि अधिकारियों तथा कृषि वैज्ञानिकों से कहा कि जिले में कृषक-वैज्ञानिक परिचर्चा, कृषक संगोष्ठि, प्रगतिशील किसानों के खेतों का भ्रमण आदि गतिविधियों के माध्यम से किसानों को जैविक कृषि पद्धति और इससे होने वाले लाभ की जानकारी देते हुए जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने निर्देश दिए कि किसानों को फसलों की उन्नत और अधिक उत्पादन वाली किस्मों, नवीन कृषि तकनीकों, कम लागत में अधिक मुनाफे वाली फसलों की जानकारी के साथ ही उद्यानिकी, पशुपालन, इंटिग्रेटेड फार्मिंग का भी प्रशिक्षण दिया जाए। बैठक में बताया गया कि जिले के 10 किसानों के समूह का सितम्बर माह में राज्य के बाहर कृषि विज्ञान केन्द्र झालावाड़ राजस्थान में प्रशिक्षण कराया गया जिसमें किसानों को उद्यानिकी, पशुपालन, इंटिग्रेटेड फार्मिंग, प्राकृतिक एवं जैविक खेती संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त

अगस्त माह में जिले के 53 किसानों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर नर्मदापुरम में कृषि उन्नत तकनीकों एवं जैविक खेती संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त किया। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने अधिकारियों से कहा कि प्रशिक्षण में किसानों द्वारा क्या-क्या सीखा गया, कौन-कौन सी तकनीक अपने खेतों में अपनाई गई और उससे क्या लाभ हुआ! इसका अवलोकन करें। साथ ही अन्य किसानों को इन प्रशिक्षित किसानों के खेतों का भ्रमण भी कराएं। बैठक में रायसेन में प्रति रविवार को जैविक हाटबाजार के आयोजन होने के संबंध में चर्चा के दौरान बैठक में उपस्थित जैविक खेती करने वाले किसान श्री योगेन्द्र पटेल तथा अन्य किसानों ने कहा कि यह शासन की अच्छी पहल है और इसके सकारात्मक परिणाम भी मिल रहे हैं। इससे नागरिकों में जैविक उत्पादों को लेकर जागरूकता बढ़ेगी और जैविक खेती कर रहे किसानों को भी उत्पाद के विक्रय हेतु स्थान उपलब्ध हो गया है। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने कृषि अधिकारियों को जैविक हाट बाजार के आयोजन का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने संबंधी निर्देश भी दिए। बैठक में उप संचालक कृषि श्री केपी भगत द्वारा जिले में कृषि विभाग अंतर्गत संचालित योजनाओं, वर्ष 2025-26 में प्राप्त लक्ष्यों और उनकी प्राप्ति एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी गई। बैठक में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, कृषि अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, जिले के प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहे।

30 हजार से अधिक शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया प्रगति पर

बच्चों को दी जाने वाली सुविधाएं शैक्षणिक सत्र समय पर कराई गई उपलब्ध

स्कूलों में नामांकन दर को बढ़ाने एवं ड्रॉपआउट दर को घटाने के लिये किये गये ठोस प्रयास

विकास और सेवा के 2 वर्ष पर स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री सिंह ने पत्रकार वार्ता में दी जानकारी

सीहोर (निप्र)। स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि इस वर्ष शैक्षणिक सत्र में बच्चों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएं निर्धारित समय पर उपलब्ध कराई गई हैं। स्कूल शिक्षा विभाग ने पहली बार 'प्रवेशोत्सव' का आयोजन अप्रैल के प्रथम सप्ताह में ही शुरू किया था। इस कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों की भागीदारी सराहनीय रही है। स्कूलों में कक्षा एक, 6 और 9 में प्रवेश प्रक्रिया का सरलीकरण किया गया है। कक्षा 6 में प्रवेश के लिये प्रधानाध्यापक और माध्यमिक शाला में कक्षा 9 में प्रवेश के लिये प्राचार्य को जिम्मेदारी दी गई। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह सोमवार को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में विकास और सेवा के 2 वर्ष पर केन्द्रित पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. संजय गोयल, परिवहन विभाग के सचिव श्री मनीष सिंह, परिवहन आयुक्त श्री विवेक शर्मा, संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह एवं विभागीय अधिकारी भी मौजूद थे।

कक्षा 5 एवं 8 की बोर्ड पैटर्न परीक्षा परिणाम मार्च में घोषित

मंत्री श्री सिंह ने बताया कि कक्षा एक में कुल नामांकन वर्ष 2025-26 में पिछले वर्ष की तुलना में 19.6 प्रतिशत एवं शासकीय विद्यालयों में 32.4 प्रतिशत अधिक रहा है। प्रदेश में बच्चों की पढ़ाई शैक्षणिक सत्र शुरू होते ही हो, इसके लिये कक्षा 5 एवं 8 की बोर्ड पैटर्न परीक्षा के परिणाम मार्च माह में ही घोषित कर दिये गये। उन्होंने बताया कि शासकीय योजनान्तर्गत निजी विद्यालयों में अध्ययनरत पात्र परिवारों के लगभग 8 लाख 50 हजार बच्चों की फीस प्रतिपूर्ति पूर्णतः ऑनलाइन और पारदर्शी तरीके से की गई। पिछले 3 वर्षों में सभी कक्षाओं में ड्रॉपआउट दर में कमी आई है। वर्ष 2024-25 में प्राथमिक स्तर पर ड्रॉपआउट दर 6.8 प्रतिशत से घटकर शून्य हो गई है। समग्र आईडी के माध्यम से 90 प्रतिशत बच्चों की ट्रेकिंग पूर्ण की गई है।

प्रोत्साहन एवं अन्य योजनाएं

स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने बताया कि बच्चों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें समय पर उपलब्ध कराई गई और उनकी छपाई गुणवत्ता में सुधार किया गया। 94 हजार 300 प्रतिभाशाली बच्चों को लेपटॉप और 7 हजार 800 विद्यार्थियों को स्कूटी वितरित की गई। पहली बार साइकिल वितरण का कार्य अगस्त माह में ही कर लिया गया। आगामी शैक्षणिक सत्र से अप्रैल 2026 में ही साइकिल वितरण का कार्य किया जायेगा। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को छात्रवृत्ति, गणवेश, छात्रावास एवं छात्राओं के सेनिटेशन एवं हाइजीन के लिये डीबीटी के माध्यम से राशि अंतरित की गई। उन्होंने बताया कि समग्र शिक्षा अभियान की तीसरी किश्त के लिये केन्द्र सरकार को प्रस्ताव भेजने वाला देश का तीसरा एवं पहला बड़ा राज्य मध्यप्रदेश है। प्रदेश में पहली बार अतिथि शिक्षक की व्यवस्था 1 जुलाई को पूर्ण की गई। वर्तमान में 76 हजार 325 अतिथि शिक्षक कार्यरत हैं।

सभी बीएलओ ने एसडीएम सहित वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मान किया

नर्मदापुरम (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश में मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण के कार्य के तहत गृह विज्ञान महाविद्यालय में बैठक आयोजित की गई। बैठक में मतदाता सूची में नाम जोड़ने, हटाने और सुधार करने संबंधी आपत्तियों के निराकरण के लिए बीएलओ और बीएलओ सुपरवाइजर को प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम के अंत में बीएलओ और सुपरवाइजर्स ने उत्कृष्ट कार्य के लिए एसडीएम जय सोलंकी, अपर तहसीलदार शक्ति सिंह तोमर और नायब तहसीलदार रूचि गोयल का सम्मान किया। सम्मान समारोह में बीएलओ सुपरवाइजर आलेक कुमार चौबे, बीएलओ कुअर सिंह वाडिवा और माया मालवीय ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अधिकारियों को सम्मानित किया। बीएलओ सुपरवाइजर रामकुमार गौर ने बताया कि विधानसभा होशंगाबाद के मतदान केंद्र क्रमांक 1 से 140 तक कार्यरत समस्त अमले को निर्वाचन कार्यालय और वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने कहा, 'निर्वाचन कार्य में सहयोग देने वाले सभी बीएलओ और सुपरवाइजर्स ने बेहतर ढंग से कार्य किया, जिससे मतदाता सूची पुनरीक्षण का कार्य सरल हुआ।

कलेक्टर ने सेवानिवृत्त शासकीय सेवकों को सम्मान सहित प्रदान किए पीपीओ

सेवानिवृत्ति विराम नहीं, अनुभव को समाज से जोड़ने का अवसर है : कलेक्टर बालागुरू के.

सीहोर (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित सेवानिवृत्त शासकीय सेवकों के पीपीओ वितरण एवं सम्मान कार्यक्रम में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त होना जीवन की सक्रियता पर विराम नहीं है। यह वह समय होता है जब व्यक्ति अपने सेवा काल में अर्जित अनुभवों को समाज और आने वाली पीढ़ी के लिए उपयोग में ला सकता है। उन्होंने कहा कि जीवन निरंतर कर्म से चलता है और सेवा भावना किसी पद या दायित्व की मोहताज नहीं होती। समारोह के दौरान कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा विभिन्न विभागों से सेवानिवृत्त हुए शासकीय सेवकों को साल-श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया तथा उन्हें पीपीओ प्रदान किए गए। इस दौरान कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि शासकीय सेवकों ने वर्षों तक प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सेवानिवृत्त अधिकारी-कर्मचारी अपने अनुभवों के माध्यम से परिवार, समाज और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि सेवा के दौरान सीखी गई अनुशासन, समयबद्धता और कर्तव्यनिष्ठा से समाज को भी दिशा मिलती है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि रिटायरमेंट के बाद व्यक्ति सामाजिक सरोकारों, जनहित कार्यों, पर्यावरण संरक्षण एवं जनजागरूकता जैसी गतिविधियों से जुड़कर स्वयं को सक्रिय रख सकता है। उन्होंने सभी सेवानिवृत्त शासकीय सेवकों को उनके समर्पित एवं सफल सेवाकाल के लिए बधाई दी और आगे भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत बने रहने की कामना की। कार्यक्रम में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कुल 27 शासकीय सेवकों को पीपीओ प्रदान किए। कार्यक्रम में जिला कोषालय अधिकारी सुश्री नेहा सिंघई सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अयोध्या बायपास पर 7871 पेड़ों को काटने पर रोक

एनजीटी ने 8 जनवरी तक रोक लगाई; 10 लेन सड़क बनाने के लिए एनएचएआई कटवा रहा पेड़

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आसाराम चौराहा से रत्नागिरि तिराहे तक 16 किमी लंबे अयोध्या बायपास को 10 लेन में तब्दील करने के लिए 7871 पेड़ों को काटने पर रोक लगा दी गई है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने 8 जनवरी तक के लिए रोक लगाई है। पेड़ काटने के विरोध में कांग्रेस ने बड़ा प्रदर्शन किया था, जबकि गुरुवार को पर्यावरणविद् धरना आंदोलन करने वाले हैं।

नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) 10 लेन प्रोजेक्ट के चलते यह पेड़ कटवा रहा है। हालांकि, इनके बदले 81 हजार पौधे रोपेने का वादा भी किया है। 10 लेन करने के प्रोजेक्ट में सेंट्रल वर्ज की चौड़ाई को 5 मीटर से घटाकर 1.5 मीटर करने का भी प्लान बना है।

पर्यावरणविद् नितिन सक्सेना ने यह याचिका लगाई थी। इस पर एनजीटी ने बुधवार को आदेश जारी किया। उन्होंने बताया कि जब तक एनजीटी अपने स्पष्ट आदेश जारी नहीं कर देती, तब तक पेड़ों की कटाई नहीं होनी चाहिए थी, लेकिन गठित कमेटी ने आदेश जारी कर दिए। छुट्टी वाले दिन नगर निगम काम नहीं करता, लेकिन दो दिन में करीब दो हजार पेड़ काट दिए गए। पर्यावरण के हित में यह प्रोजेक्ट गलत है। यहां लगातार पेड़ों की कटाई हो रही है। पहले भी हजारों पेड़ काटे जा चुके हैं।

कांग्रेस का दो दिन तक प्रदर्शन

बता दें कि सोमवार को अयोध्या बायपास पर कई पेड़ों को काटने की कार्रवाई की गई थी। इसका कांग्रेस ने विरोध किया। एनएचएआई ठेकेदार के जरिए पेड़ कटवा रहा है। मौके पर पहुंचे कांग्रेस नेता अभिनव बरोलिया ने कार्रवाई का विरोध जताया। साथ ही इसे तुरंत रोकने की मांग की।अगले दिन मंगलवार को कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रवीण सक्सेना, रविंद्र साहू झूमरवाला समेत कई कांग्रेसियों ने मास्क पहनकर विरोध प्रदर्शन किया था। पर्यावरणविद उमाशंकर तिवारी ने बताया कि बायपास के दोनों ओर जो भी पेड़ काटे जा रहे हैं, उनकी उम्र 80 से 100 साल या इससे अधिक है। इनके बदले यदि नए पौधे लगाए भी जाएंगे तो उनके पेड़ बनने में सालों बीत जाएंगे। विकास के नाम पर हरियाली का विनाश मंजूर नहीं है। एनएचएआई पेड़ों की कटाई तुरंत रोके। ताकि, हरियाली बचाई जा सके।

सीएम के डॉक्टर बेटा-बहू कर रहे नर्मदा परिक्रमा

ओंकारेश्वर से शुरू की यात्रा, 15 दिन में पूरी होगी; पिछले महीने हुई थी शादी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के छोटे बेटे डॉ. अभिमन्यु और बहू डॉ. इशिता नर्मदा परिक्रमा पर निकले हैं।

सोमवार 22 दिसंबर को ओंकारेश्वर से दोनों ने नर्मदा यात्रा की शुरुआत की है।

पिछले महीने 30 नवंबर को उज्जैन में सामूहिक विवाह सम्मेलन में अभिमन्यु खरगोन जिले की डॉ. इशिता के साथ विवाह के बंधन में बंधे थे। शादी के 21 दिन बाद ही वे नर्मदा यात्रा पर निकले हैं। नवविवाहित जोड़े अभिमन्यु और इशिता के साथ नर्मदा पक्रिमा पर उनकी बड़ी बहन डॉ. आकांक्षा यादव, जीजा जी और बड़े भाई वैभव यादव- भाभी भी साथ में नर्मदा यात्रा कर रहे हैं।

15 दिन में होगी पूरी यात्रा- ओंकारेश्वर से शुरू हुई नर्मदा परिक्रमा करीब 15 दिनों में पूरी होगी। ओंकारेश्वर से महेश्वर, बड़वानी, राजपीपला गरुड़ेश्वर (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी क्षेत्र), भरूच होते हुए नर्मदा सागर संगम (खंभात की खाड़ी) जाकर यह यात्रा पूरी होगी।

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह एवं मुख्यमंत्री डॉ. यादव रीवा में कृषक सम्मेलन में होंगे शामिल

प्राकृतिक खेती प्रकल्प का करेंगे शुभारंभ- वर्ष 2026 होगा कृषि वर्ष

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 25 दिसम्बर को रीवा में प्राकृतिक खेती पर कृषक सम्मेलन कार्यक्रम में शामिल होंगे। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शाह एवं मुख्यमंत्री डॉ. यादव बसामन मामा गौ अभ्यारण्य में अपरान्ह 3 बजे से आयोजित कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती प्रकल्प का शुभारंभ करेंगे। इसके बाद गौ अभ्यारण्य के समीप आयोजित विशाल कृषक सम्मलेन में शिरकत करेंगे।

कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल, श्री हेमन्त खंडेलवाल भी शामिल होंगे। अतिथियों द्वारा ई-कार्ट के माध्यम से गौ-शाला का अवलोकन किया जायेगा। कार्यक्रम स्थल पर लगाई गई कृषि विभाग की प्रदर्शनी का अवलोकन करेंगे। कार्यक्रम में प्रगतिशील व प्राकृतिक खेती करने वाले कृषकों को सम्मानित किया जायेगा।

बसामन मामा गौ अभ्यारण्य का निर्माण बेसहारा और बीमार गौवंश को आश्रय देने के लिए किया गया है। इसमें वर्तमान में सात हजार से अधिक गौवंश को आश्रय दिया गया है। इस गौ-शाला से प्रतिदिन बड़ी मात्रा में निकलने वाले गोबर से जैविक खाद, गो काष्ठ, गोनाइल तथा अन्य उत्पाद बनाए जा रहे हैं। यह कार्य स्वयंसेवी संस्था द्वारा किया जा रहा है। वर्ष 2026 को कृषि वर्ष मनाये जाने का निर्णय लिया गया है। इसके अंतर्गत समन्वित रूप से कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में कृषकों की आय में वृद्धि की जायेगी, कृषि को प्राकृतिक खेती के माध्यम से जलवायु अनुकूल बनाया जायेगा, किसानों की उपज के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित किया जायेगा, तकनीकी सुधार एवं यंत्रीकरण पर विशेष जोर होगा, डिजीटल एग्री के माध्यम से क्षेत्र का आधुनिकीकरण करना एवं कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में विविधीकरण को बढावा देना, मूल्य संवर्धन के माध्यम से नये रोजगार सृजन किया जायेगा।

ग्वालियर में 25 दिसंबर को 'अभ्युदय मध्यप्रदेश ग्रोथ समिट'

गृह मंत्री शाह और मुख्यमंत्री करेंगे युवाओं को सम्मानित

2 लाख करोड़ रूपये की औद्योगिक इकाइयों का होगा भूमि-पूजन और लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश औद्योगिक निवेश को रोज़गार में परिवर्तित करने का निरंतर कार्य कर रहा है। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में गुरूवार 25 दिसंबर 2025 को ग्वालियर के मेला ग्राउंड में 'अभ्युदय मध्यप्रदेश ग्रोथ समिट - निवेश से रोज़गार' का राज्य स्तरीय आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन औद्योगिक नीति, निवेश प्रोत्साहन और रोज़गार आधारित विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। कार्यक्रम में निवेशकों को सिंगल क्लिक से औद्योगिक प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाएगी। भारत रत्न से सम्मानित पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर आयोजित ग्रोथ समिट आत्मनिर्भर, समृद्ध और रोज़गार-समृद्ध मध्यप्रदेश के संकल्प को रेखांकित करेगी।

'अभ्युदय मध्यप्रदेश ग्रोथ समिट में 2 लाख करोड़ रूपये से अधिक के निवेश प्रस्तावों के लिये भूमि आवंटन किया जायेगा। इसके साथ ही 10,000 करोड़ रूपये से अधिक की औद्योगिक परियोजनाओं का भूमि-पूजन और लोकार्पण किया जाएगा। इससे प्रदेश में विकासात्मक गतिविधियों को और अधिक गति मिलेगी। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर आयोजित इस ग्रोथ समिट से प्रदेश विकास की नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर होगा। निवेश से रोज़गार - अटल संकल्प, उज्ज्वल मध्यप्रदेश की थीम पर आधारित इस समिट

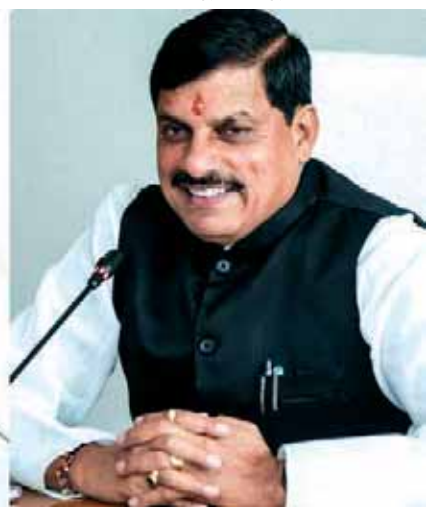

में विगत 2 वर्षों में प्रदेश में हुए औद्योगिक विस्तार, निवेश उपलब्धियों और रोज़गार सृजन के वास्तविक परिणामों को सबके साथ साझा किया जायेगा। इस समिट से आने वाले वर्षों में विकास की नई दिशा भी तय की जायेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में स्थानीय लोगों के समग्र विकास के लिये उन्हें सीधे रोजगार और आजीविका से जोड़ने के लिये ग्रोथ समिट का आयोजन किया जा रहा है। इस समिट से नए औद्योगिक क्षेत्र, क्लस्टर और प्लग-एंड-प्ले इकाइयों की शुरुआत से स्थानीय स्तर पर उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा मिलेगा। इससे युवाओं के लिए रोज़गार के नए अवसर सृजित होंगे।

समिट में भूमि-पूजन और लोकार्पण के साथ भूमि आवंटन और आशय-पत्र भी वितरित किये जायेंगे। इस अवसर पर रोज़गार उपलब्ध कराने वाली औद्योगिक इकाईयों की स्थापना एवं संचालन करने वाले निवेशकों को सम्मानित किया जाएगा। समिट में युवाओं से संवाद भी किया जाएगा। संभाग स्तर पर औद्योगिक भूमि आवंटन से जुड़ी महत्वपूर्ण घोषणाएँ भी की जाएँगी, जिससे क्षेत्रीय विकास को गति मिलेगी।

उद्योग जगत की सहभागिता

ग्रोथ समिट में देश के प्रतिष्ठित उद्योगपति और औद्योगिक संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल होंगे। इनमें गोदरेज इंडस्ट्रीज, गौतम सोलर, हीडलबर्ग सीमेंट, एलएनजे भीलवाड़ा समूह, जेके टायर, टोरेंट पावर, मैकेन फूड, एलिक्सर इंडस्ट्रीज़, ग्रीनको, जुपिटर वैगन्स, डाबर इंडिया, वर्धमान समूह, गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स और भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड जैसे प्रमुख औद्योगिक समूहों के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

प्रदर्शनी

कार्यक्रम स्थल पर स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन, विचारों और विकास दृष्टि पर आधारित विशेष प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी। इसके साथ ही प्रदेश में बीते 2 वर्षों में हुए औद्योगिक सुधारों, निवेश प्रयासों और रोज़गार उपलब्धियों को दर्शाने वाली प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी, जिससे मध्यप्रदेश की औद्योगिक यात्रा को एक ही स्थान पर देखा जा सकेगा। समारोह में उपमुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला, एमएसएमई मंत्री श्री चेतन्य काश्यप, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास सारंग सहित अन्य कैबिनेट मंत्री उपस्थित रहेंगे।

2 डॉक्टरों की पूरे महीने की सैलरी कटी

500 किमी दूर से एक ने लगाई हाजिरी, दूसरे की अटेंडेंस में अलग-अलग चेहरे आए नजर

भोपाल (नप्र)। भोपाल में मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक में पदस्थ चिकित्सकों द्वारा नियमों को ताक पर रखकर की गई फर्जी अटेंडेंस का चौंकाने वाला मामला सामने आया है।

जांच में खुलासा हुआ कि एक डॉक्टर ने अपने कार्य स्थल से करीब 500 किलोमीटर दूर रहते हुए ऐप पर हाजिरी लगा दी। जबकि दूसरे मामले में एक ही डॉक्टर की अटेंडेंस में अलग-अलग चेहरों की तस्वीरें दर्ज मिलीं।

यह गड़बड़ी सीएमएचओ कार्यालय की नियमित समीक्षा के दौरान पकड़ में आई। मामला सामने आते ही मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. मनीष शर्मा ने सख्त रुख अपनाते हुए दोनों डॉक्टरों का एक माह का वेतन काटने के आदेश बुधवार को जारी कर दिया है।

सार्थक ऐप की निगरानी से सामने आया मामला- पिछले कुछ समय से भोपाल सीएमएचओ कार्यालय 'सार्थक ऐप' पर दर्ज की जा रही उपस्थिति की नियमित निगरानी कर रहा है। इसी प्रक्रिया के तहत जब हालिया उपस्थिति डेटा का विश्लेषण किया गया, तो कुछ एंट्री असामान्य पाई गईं। ऐप में दर्ज लोकेशन और फोटो वेरिफिकेशन ने स्पष्ट संकेत दिए कि संबंधित चिकित्सक वास्तविक कार्य स्थल पर मौजूद नहीं थे, इसके बावजूद उनकी उपस्थिति दर्ज हो रही थी। यह स्थिति न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि डिजिटल सिस्टम की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े करती है।

एक ही डॉक्टर, अलग-अलग चेहरे- पहला मामला मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक, बाग मुगलिया से जुड़ा है। यहां पदस्थ चिकित्सक डॉ. मिनहाज की उपस्थिति जांच के दौरान और भी चौंकाने वाला तथ्य सामने आया। सार्थक ऐप पर दर्ज उनकी हाजिरी में अलग-अलग लोगों के चेहरे दिखाई दिए। इससे संदेह गहराया कि या तो किसी अन्य व्यक्ति से उपस्थिति दर्ज करवाई गई या फिर तकनीकी सिस्टम से छेड़छाड़ की गई। अधिकारियों के मुताबिक यह मामला सिर्फ गैरहाजिरी का नहीं, बल्कि डिजिटल प्रक्रिया के दुरुपयोग का भी संकेत देता है।

500 किलोमीटर दूर से लगी हाजिरी- दूसरा मामला मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक, गौतम नगर में पदस्थ चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजीव सिंह से जुड़ा है। उन्होंने अपने कार्यस्थल से लगभग 500 किलोमीटर दूर रहते हुए 'सार्थक ऐप' पर उपस्थिति दर्ज करा दी। इतना ही नहीं, रोजमर्रा की उपस्थिति भी लगभग 11 किलोमीटर दूर की लोकेशन से लगाई जा रही थी। इससे साफ है कि चिकित्सक नियमित रूप से अपने निर्धारित क्लिनिक में उपस्थित नहीं थे, जबकि कागजों में वे ड्यूटी पर मौजूद दिखाए जा रहे थे। सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा ने कहानियम विरुद्ध उपस्थिति केवल कागजी अनियमितता नहीं है। इसका सीधा असर मरीजों की स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ता है। मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आम नागरिकों को सुलभ, सस्ती और समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। इससे मरीजों की जांच, इलाज और परामर्श प्रभावित होना स्वाभाविक है।

पूरे महीने की सैलरी काटी

मामले की गंभीरता को देखते हुए सीएमएचओ भोपाल ने तत्काल सख्त कार्रवाई करते हुए दोनों चिकित्सकों का एक माह का वेतन काटने के आदेश जारी किए हैं। यह कार्रवाई न केवल दंडात्मक है, बल्कि अन्य कर्मचारियों के लिए भी एक कड़ा संदेश मानी जा रही है कि नियमों से खिलवाड़ किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

बड़े भाई ने छोटे भाई की हत्या की

नरसिंहपुर (नप्र)। नरसिंहपुर जिले के गाडरवारा शहर में आजाद वार्ड में एक बड़े भाई ने अपने ही छोटे भाई की जान ले ली। यह घटना मंगलवार रात को हुई। 35 साल के तेजराम धानक और उसका छोटा भाई 23 साल का राकेश धानक घर पर बैठकर शराब पी रहा था। नशा चढ़ने के बाद दोनों के बीच किसी बात को लेकर बहस शुरू हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि तेजराम ने गुस्से में आकर पास रखा फावड़ा उठा लिया।

गुस्से में तेजराम ने अपने छोटे भाई राकेश पर फावड़े से कई वार कर दिए। राकेश बुरी तरह घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा।

घरवाले आनन-फानन में उसे गाडरवारा के अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन घाव इतने गहरे थे कि इलाज के दौरान राकेश ने दम तोड़ दिया।

आरोपी भाई गिरफ्तार

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची।

एडिशनल एसपी संदीप भूरिया ने बताया कि आरोपी भाई तेजराम को गिरफ्तार कर लिया है। हत्या का मामला दर्ज कर लिया है और आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेजने की तैयारी की जा रही है।

अतिक्रमण हटाने के दौरान दंपती ने खुद को आग लगाई

देवास में गंभीर रूप से झुलसे, दोनों इंदौर रेफर, लोगों ने किया चक्काजाम

खातेगांव (नप्र)। देवास में अतिक्रमण हटाने पहुंची टीम के सामने पति-पत्नी ने खुद को आग लगा ली। दोनों गंभीर रूप से झुलस गए। दंपती को प्राथमिक उपचार के बाद इंदौर रेफर किया गया है। इधर, कलेक्टर ने तहसीलदार को कलेक्टर कार्यालय में अटैच कर दिया है। घटना खातेगांव के सतवास में बुधवार की है। जानकारी के अनुसार, सतवास बस स्टैंड पर स्टेशनरी और फोटोकॉपी की दुकान चलाने वाले संतोष व्यास एक कॉलोनी में मकान का निर्माण करवा रहे थे। प्रशासन को इस निर्माण में अतिक्रमण की शिकायत मिली थी। इसके बाद बुधवार को तहसीलदार अरविंद दिवाकर जेसीबी मशीन के साथ निर्माण हटाने के लिए मौके पर पहुंचे। कार्रवाई के दौरान संतोष व्यास और उनकी पत्नी जयश्री व्यास की तहसीलदार से बहस हो गई। इसी बीच, दंपती ने तहसीलदार के सामने ही अपने ऊपर पेट्रोल डालकर आग लगा ली।